SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 06
November - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

नवंबर-2025

रु.20/-

तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का पंचमीतीर्थ

25-11-2025

2025, सितंबर 24, 25 वा तारीखों में तिरुमल श्री बालाजी को भारतीय उप-राष्ट्रपति माननीय श्री सी.पी.राधाकृष्णन् जी ने दर्शन किया। इस संदर्भ में तीर्थ-प्रसाद व चित्रपठ को उप-राष्ट्रपति जी को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी और ति.ति.दे. का ई.ओ. ने सौंपा दिया है। ब्रह्मोत्सव के अवसर पर उप-राष्ट्रपति जी ने महाशेष वाहन सेवा में भाग लिया।

दि.24-09-2025 को तिरुमल श्री बालाजी का ब्रह्मोत्सव के अवसर पर आं.प्र. राज्य सरकार की ओर से आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन.चंद्रबाबू नायडू जी ने पवित्र रेशमी वस्त्र भगवान जी को समर्पित किया। इस संदर्भ में भगवान जी का तीर्थ-प्रसाद व चित्रपठ को मुख्यमंत्री जी को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी और ति.ति.दे. का ई.ओ. ने सौंपा दिया। इस संदर्भ में नूतन वर्ष 2026 के ति.ति.दे. का कैलंडर और डायरी को विमोचन किया। इस कार्यक्रम में आं.प्र. के धर्मस्व शाखा के मंत्री श्री ए.रामनारायण रेड्डी जी, आं.प्र. के आई.टी. मंत्री श्री एन.लोकेश जी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अन्य सदस्य गण के साथ ति.ति.दे. का अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३२)

हे पार्थ! अपने-आप प्राप्त हुए और खुले हुए स्वर्ग के द्वार रूप इस प्रकार के युद्ध को भाग्यवान् क्षत्रिय लोग ही पाते हैं।

सहज वैष्णवाचार वर्तनुल
सहवासमे मा संध्या ॥सहज॥

अतिशयमगु श्रीहरि संकीर्तन
सततंबुनु मा संध्या
मति रामानुज मतमे माकुनु
चतुरत मेरसिन संध्या ॥सहज॥

परम भागवत पद सेवनमे
सरवि नेत्र का संध्या
सिरिवरु महिमलु चेलुवोंदग वे
सरक विनुटे मा संध्या ॥सहज॥

मंतुकेक्क तिरुमंत्र पठनमे
संततमुनु मा संध्या
कंतु गुरुडु वेंकटगिरि रायनि
संतर्पणमे मा संध्या ॥सहज॥

अपनी संध्योपासना के लक्षणों को, वैष्णवाचारों के साथ अन्वय करके विवरण प्रस्तुत किया गया है।

निर्मल वैष्णव भक्तों का सहवास ही मेरी संध्या-गायत्री है। सर्वदा श्रीहरि के नाम-गुण-संकीर्तन ही मेरी संध्योपासना है। भगवद्रामानुज के सिद्धांतों को सकुशल व्याप्त करना ही मेरी संध्या है।

परम भागवतों की पदसेवा तथा लक्ष्मीनाथ की महिमाओं का चारों पहर श्रवण करना ही मेरी आराधना है। सदा तिरुमंत्र(अष्टाक्षरी) का मनन तथा मदन-जनक, वेंकटगिरीश को संतुष्ट करना ही मेरी संध्योपासना है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

दि.17-11-2025 से दि.25-11-2025 तक

दिनांक	वार	दिन	रात
17-11-2025	सोमवार	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	लघुशेषवाहन
18-11-2025	मंगलवार	महाशेषवाहन	हंसवाहन
19-11-2025	बुधवार	मोतीवितानवाहन	सिंहवाहन
20-11-2025	गुरुवार	कल्पवृक्षवाहन	हनुमद्वाहन
21-11-2025	शुक्रवार	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गजवाहन
22-11-2025	शनिवार	सर्वभूपालवाहन, सा.स्वर्णरथ	गरुड़वाहन
23-11-2025	रविवार	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
24-11-2025	सोमवार	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
25-11-2025	मंगलवार	पंचमीतीर्थ, चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 नवंबर-2025 अंक-06

विषयसूची

तिरुचानूर श्री अलमेलुमंगतायार के ब्रह्मोत्सवों का वैभव	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	13
देवी माँ का कुंकुमार्चन	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	16
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	20
नव नंदियों का महिमान्वित क्षेत्र नंद्याल	डॉ.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	22
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	31
काशी की विशिष्टता	श्री वेमुनूरि राजमौलि	34
भगवान धन्वंतरि का परिचय	श्री अवधेश कुमार शर्मा	36
श्री रामानुज नूट्न्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	41
खीरा	डॉ.सुमा जोषि	42
नवम्बर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - बेजुबान जानवर	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - सोने की वर्षा	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 40		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - श्री पद्मावती देवी, तिरुचानूर।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री पद्मावती देवी का पुष्पयाग, तिरुचानूर।

गौरव संपादक
श्री अनिल कुमार सिंघाल, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

जगन्माता! वंदनम्!!

पद्मालंकृत पाणिवल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियम्।

वात्सल्यादि गुणोज्वलां भगवतीं वंदे जगन्मातरम्।।

इस दुनिया ऐश्वर्ययुक्त बन गया हैं। हमारे महर्षि गण ने संपदाओं की माँ का दिव्यत्व को लक्ष्मी देवता के रूप में दर्शन किया है। जगत्कारक ईश्वर का शक्ति ही 'लक्ष्मी' है। महालक्ष्मी माने केवल धनरूपात्मक शक्ति ही नहीं, शुद्धसत्व स्वरूपिणी है। शुभंकर गुणों का साकार रूप ही माँ लक्ष्मी है। यह माँ को 'पद्म' जैसा नाम भी हैं। कमल खिलने का प्रतीक का रूप ही पद्म है। ज्ञानविकास का प्रतीक का रूप ही पद्म खिलना और 'ऐश्वर्य' का भी प्रतीक बन गया है। हमारे शास्त्रों से विदित होता है कि श्री महाविष्णु के हृदयपद्म में लक्ष्मी देवी वास किया है। माने- 'श्री महाविष्णु का संकल्पशक्ति ही ऐश्वर्य के रूप में विस्तार हुआ है।'

जगन्माता श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव कार्तिक मास में संपन्न करना एक रिवाज है। साधारण से हमारे पुराण वांग्मयम् में बारह मासों का महिमा विशेषताओं को बताने वाले लघु पुराणों में प्रसिद्ध विख्यात पुराण ही 'कार्तिक मास पुराण', 'माघ माह पुराण' है। ऐसा विशिष्ट मास में आयोजित करनेवाले देवी माँ का ब्रह्मोत्सव अत्यंत वैभव से संपन्न करते हैं। माँ को संपन्न करनेवाले विविध वाहनों की सेवाओं में 'गजवाहन' ही सर्वश्रेष्ठ हैं। स्थिरत्व व आध्यात्मिक शक्ति का गजतत्व संकेत हैं। देवी माँ गजवाहन पर आरूढ़ होकर, माड़ावीथियों में जुलूस निकालने के द्वारा भक्तों में अटूट भक्ति, साहस का केंद्र बिन्दु बन जाता है।

कार्तिक शुद्ध पंचमी तिथि ही जगन्माता पद्मावती का जन्म दिवस है। माने माँ का अवतार उद्भव दिवास है। उस दिन भगवान बालाजी से देवी माँ को जन्म दिवस के अवसर पर - साड़ी, ब्लाउज, चंदन, हल्दी, कुमकुम, तुलसी और प्रसाद भेंट के रूप में उपलब्ध होते हैं। माँ के ब्रह्मोत्सव में 'पंचमीतीर्थ' को एक विशिष्ट स्थान है। यह कार्यक्रम माँ का पद्मसरोवर में संपन्न करते है। पुष्करिणी के किनारे पर माँ और चक्रत्ताल्वार भगवान मूर्तियों को तिरुमंजन आयोजित करते हैं। बाद में अर्चक स्वामीजी ने पद्मपुष्करिणी में सुदर्शन मूर्ति को 'चक्रस्नान' को निर्वहण करते हैं। यह माँ का ब्रह्मोत्सव का प्रधान पूजा के रूप में दिखाते हैं। यह पूजा को देखने के लिए लाखों लोग पधार कर माँ का आशीश को प्राप्त लेते हैं।

कार्तिक माह हरि-हरों का प्रीतिकर माह है। इसी कार्तिक माह में तिरुपति में स्थित श्री कपिलेश्वर स्वामी के सन्निधि में 'अन्नाभिषेक' पूजा का एक विशेष स्थान है। वैसे ही 'लक्ष बिल्वार्चन' भी अत्यंत नयनमनोहर रूप से आयोजित करते हैं। इसी मंदिर में विराजित श्री कुमार स्वामी का 'स्कंधषष्ठि उत्सव' भी एक अत्यंत पुण्य प्रद सेवा है। इसी समय में तिरुमल में 'कैशिकद्वादशी' पूजा का विशिष्ट स्थान है। इस संदर्भ में बालाजी के पाँच उत्सवमूर्तियों में एक उत्सवमूर्ति 'श्री उग्रश्रीनिवास मूर्ति' को सूर्योदय के पहले ही माड़ावीथियों में जुलूस निकाल कर स्वामी के सन्निधि को पहुँचा जाते है। यह वर्ष में एक बार मात्र ही संपन्न करते हैं। 'कार्तिक पूर्णिमा' के दिन 'दीपोत्सव', 'ज्वालातोरण' उत्सव देखना अत्यंत मुक्ति प्रदायक है।

इसी महीने में ति.ति.दे. का स्थानीय मंदिरों में नारायणवणम्-श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में प्लवोत्सव; नगरी-श्री करियमाणिक्य स्वामी का पवित्रोत्सव; नागुलापुरम्-श्री वेदनारायण स्वामी का पवित्रोत्सव; तिरुचानूर-श्री पद्मावती देवी का पुष्पयाग महोत्सव जैसा उत्सव में भक्तगण भाग लेकर भगवान जी का आशीश को प्राप्त लेंगें।

तिरुचानूर श्री अलमेलुमंगतायार के ब्रह्मोत्सवों का वैभव

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

मानव जब अपने प्रयत्नों में अशक्त बन जाता है, तो दैवी शक्तियों का सहारा लेता है, अर्थात् अपनी चहेती देवताओं से प्रार्थना करता है कि वह अपनी सहायता करें! और, मनुष्य की सहायता करने के लिए हरहमेशा सब देवी-देवता तैयार रहते हैं! आजकल हिन्दुस्तान में माँ ''अलमेलुमंगा'' भक्तों को आश्रय देने में सर्व प्रथम स्थान में खड़ी हुई है, जिसकी आज ''ब्रह्मोत्सवों'' की हेला चलने वाली हैं।

भारत में असंख्याक मंदिर हैं, जिनके एक-एक का एक इतिहास है। वैसे माँ अलमेलुमंगतायार के मंदिर का भी अपना स्वयं इतिहास है!!

ऋषियों का कलिशांति-यज्ञ

द्वापरयुग की परिसमाप्ति हो चुकी थी। महा संघर्ष से निबटकर श्री मन्महाविष्णु - श्री महालक्ष्मी दम्पती अभी-अभी वैकुंठ में पधार कर विश्राम फर्मा रहे थे! और, इधर भूलोक में ''कलियुग'' का प्रवेश हो गया।

ऐसे कलियुग का प्रवेश हो करके 18 साल बीत चुके थे।

ऐसे प्रवेशित कल्लोलित कलियुग को शांत बनाने के जतन में कुछ ऋषि-मुनि-अत्रि, कण्व, भृगु, गौतम आदि- एक-साथ बैठ कर मंत्रणा कर रहे थे। आखिर उन्होंने ''कलिशांति-यज्ञ'' करने का सोचा।

पावन गंगा के तट पर ''कलिशांति-यज्ञ'' आरंभ हो गया।

इतने में वहाँ ब्रह्मर्षि नारद आ पहुँचे।

नारद ने महर्षियों से प्रश्न किया कि आपके यज्ञ के स्वीकर्त्ता यज्ञ-पुरुष कौन है? - इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर सब महर्षि निरुत्तर रह गये। नारद चला गया।

यज्ञ-स्वीकर्त्ता यजमानी न होते हुए यज्ञ न हो सकता। तो, महर्षियों ने ब्रह्म, विष्णु, महेश्वरों में से किसी एक को अपने यज्ञ का यजमानी चुनना चाहा। उन्होंने इस कार्य के लिए महर्षिभृगु को समर्थ समझ कर उसे नियुक्त किया।

भृगुमहर्षि तीनों लोकों का पर्यटन कर यज्ञ पुरुष ढूँढने के काम पर निकला!

भृगुमहर्षि की त्रिलोक-यात्रा

महर्षि भृगु सर्व प्रथम ''सत्यलोक'' गया, जहाँ ब्रह्मदेव का राज चलता है। माँ सरस्वती वीणावादन कर रही थी और ब्रह्मदेव बड़ी तन्मयता के साथ सुन रहे थे!

भृगुमहर्षि की किसी ने कुछ खातिरदारी नहीं की! ऐसा काफी समय गुज़र गया। भृगु को क्रोध आ गया। क्रोध में उसने ब्रह्म को शाप दे दिया कि ''भूलोक में ब्रह्म का न कोई मंदिर बनेगा और न ही पूजा चलेगी।''- जो आज तक चल रहा है!

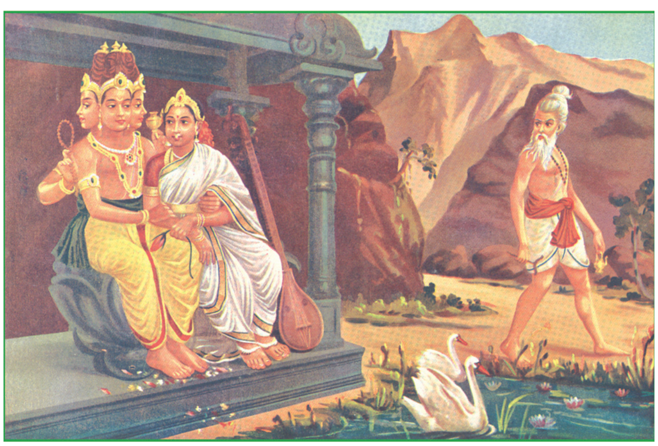

कैलास में

इस पर भृगु झट ब्रह्मलोक त्याग कर कैलास में पहुँच गया, जहाँ परमशिव का अधिकार चलता है। कैलास में सब ओर सन्नाटा छाया हुआ था। कहीं कोई दिख नहीं रहा था। वहाँ न राजा था और भी न प्रजा। भृगु महेश्वर को ढूँढता गया, तो पाकर अवाक् रह गया

कि एक ओर रहस्यमय प्रदेश में माँ पार्वती और परमशिव रतिक्रीड़ा-कलाप में निमग्न थे!!

क्या इस आदि-दंपतियों का यह करतब?! और इस हालत में भृगु का सम्मान करने वाला और कुशलमंगल की पूछ-ताछ करने वाला कौन?

असीम कोछ में आकर भृगु ने महादेव को शाप दे दिया कि ''भूलोक में परमशिव की उसकी मूर्ति को न हो करके उसके लिंग की ही पूजा चलेगी!!'' और, भृगु झट कैलास छोड़ चला आया!!

वैकुंठ में

अब भृगु सरासर वैकुंठ पहुँचा। वैकुंठ में भी सब जगह सन्नाटा ही सन्नाटा था, क्योंकि श्रीस्वामी, श्रीमन्महालक्ष्मी अभी-अभी द्वापर से निबटाकर वैकुंठ पहुँचे हुए थे।

श्रीदेवी, भूदेवी, शंख, चक्र, वैजंतीमाला, कौस्तुभ, नंदक, कौमोदकी-गदा, शारंग, गरुड़, जय, विजय द्वारपाल-समेत समस्त वैकुंठ द्वापर के श्रम से थके-माँदे विश्राम फर्मा रहे थे। अतएव भृगु का किसी ने भी स्वागत न किया और खातिरदारी तो अलग! भृगु श्रीस्वामी के सन्निधान में काफी समय तक मौन हाथ जोड़े खड़ा रहा। ऐसा बहुत समय गुजारने पर भृगु ने संभाल नहीं पाया। उसे बेहद गुस्सा आया।

ये सब त्रिदेव!?! ....

एक तो निज धर्मपत्नी के वीणावादन में तन्मय आराम फर्माता है। दूसरा-अकाल पड़े जैसा - रतिक्रीड़ा में मगन रहता है! और तीसरा-अपने नर्म सर्प-पर्यंक पर सोया पड़ा रहता है!!... लोक-कल्याण में आये ऋषि-मुनियों का जरा भी इन्हें चिंता नहीं! भाड़ में जाये इनकी लोक-पूजिता!... मारो दुष्टों को...

और क्या, असीभ क्रोधावेश में आये महर्षि भृगु ने कदम उठा कर, अति वेग से छलाँग मार कर लगा कर श्री मन्महाविष्णु के वक्षःस्थल पर दम लगा के जोर से लात मारा!!

भृगु की इस दुश्चर्या से श्रीस्वामीजी की नींद टूट गयी; वे जाग गये!! अब क्या हुआ? सारा वैकुंठ ही जाग गया। क्या हुआ था?- अरे! किसी क्रोधीला मानव ने श्रीस्वामी के वक्ष पर जोरदार लातमारा। अब क्या होगा?

भृगु की वह लात कौस्तुभ आदि महामणियों के संग श्रीस्वामी के वक्षःस्थल पर विराजित ''व्यूहमूर्ति'' श्री मन्महालक्ष्मीजी को लग गया और लक्ष्मीजी वहाँ से हट कर बाहर आकर खडी हो गयी।

अब क्या होगा?! कुछ न हुआ! श्रीस्वामीजी ने अपने को लात मारे हुए महर्षि को शेषपर्यंक पर बिठाकर यह कहते हुए उसका पाद-संवहन करने लगा कि

कौस्तुभादि कठिन मणियों के कारण उसका पाँव दबाने लग गया! स्थितिकारमूर्ति अपने पति को लात मारे हुए दुष्ट मुनि के पाद-संवहन में लगे रहने से रूठ कर महालक्ष्मी झटाक से वैकुंठ छोड़ कर भूमंडल पर आगयी और ''कोल्हापुर'' नामक स्थान पर विराजमान होकर स्थित रह गयी।

महाविष्णु का भूलोक गमन

भृगु लंगडाते हुए वैकुंठ में से चला गया, क्योंकि महविष्णु ने पाद-संवहन के ब्याज से उसके चरण के नीचे होने वाले उसके ज्ञान-नेत्र को दबा देने से वह फूट गया था! भृगु के निर्गम से महाविष्णु ने अपनी हृदय-रानी महालक्ष्मी के लिए सारे वैकुंठ में छान-बीन की, मगर माता का कहीं पता न था! वह तो भूलोक में चली आ चुकी थी!!

महालक्ष्मी को ढूँढते-ढूँढते महाविष्णु भी भूलोक आ पहुँचा!

इधर-उधर ढूँढा, तो कहीं वह मिली तब न!!

महाविष्णु की तपस्या

महालक्ष्मी को तलाशते हुए महाविष्णु आज की तिरुमलगिरि से आग्नेय दिशा में ''नारायणवरम्'' नामक प्रान्त में पहुँचा, जिसके शासक ''आकाशराज'' था। राजा आकाश की धर्मपत्नी व पटरानी का नाम ''धरणीदेवी'' था। आकाशराज दम्पती निस्संतान थे!

महाविष्णु नारायणवरम् से चार कि.मी. की पश्चिमी दिशा में एक घने जंगल में बैठ कर श्रीदवी के ध्यान में मगन रहा। ऐसा कई साल बीत गये। उस पर बाँबी भी बढ़ गयी!

महाविष्णु का प्रकट होजाना

उस जंगल में राजा आकाश की पशुओं का झुंड चरने आता था, जहाँ महाविष्णु तपस्या करे। ऐसे चरने

आती पशुओं में से एक दुधारी गाय सरासर उस बाँबी में आ कर समृद्ध रूप से दूध छोड़ती थी! जहाँ महाविष्णु ध्यानमगन हो बैठा है।

वह गाय जब घर में दुही जाय तो इतना दूध न देती थी, जितना देना चाहिए था। तो, इस परी निगरानी रखी थी चरवाहे ने! एक दिन गाय बाँबी में दूध दुहने लग गयी, तो चरवाहे ने देखलिया!

चरवाहा दूर से जोर से चिल्लाते हुए दौड़ कर आया और असीम क्रोध से अपने हाथ की कुल्हाड़ी से बाँबी में दूध दुहती हुई गाय पर वार कर दिया!

गाय भाँप गयी और कुल्हाड़ी के घात से बच निकल कर झट भागती हुई जंगल में कहीं अदृश्य हो गयी! असल में वह गाय ''ब्रह्मदेव'' थी, जो देवताओं के आज्ञापन कर इस तर भेश बदल कर आया हुआ था।

बाँबी के बाहर होते हुए इस शोर-गुल से अंदर के महापुरुष का ध्यानभंग हो गया, तो वह बाँबी तोड़ते हुए झट खा होगया। चरवाहे की कुल्हाड़ी का घात बाँबी से उठे उस महाविष्णु के शिर पर लग गया। अपना सामने हठात् बाँबी से उठ खड़े महापुरुष को देख कर और अपनी कुल्हाड़ी का घात उस महापुरुष को लगते देख कर राजा आकाश के चरवाहे का कलेजा फूट गया और वह तत्काल वहीं जमीन पर गिर कर मर गया।

महाविष्णु 'श्रीनिवास' बनना

भृगु के वैकुंठ के आगमन से महाविष्णु दम्पतियों के जीवन में काफी बदलाव आ पाया। यहाँ तक कि वे दोनों पति-पत्नी बिछुड़ गये। महालक्ष्मी अपने पति से रूठ कर भूलोक में चली आगयी, तो श्रीस्वामी पागल-से बन गये अपनी प्रियपत्नी के बिछडन से!

उनकी मनोशांति हर गयी। उन्होंने हर पल अपनी पत्नी का ही नाम ध्यान करते-करते हर पल गँवाया। अपनी पत्नी को ही याद करते हुए वह ध्यानमग्न रह गया। अपनी पत्नी ''श्रीदेवी'' का हर पल ध्यान करने वाले हृदयवाले होने से तब से श्री महाविष्णु ''श्रीनिवास'' नाम से विख्यात बन गया।

वकुलमालिका

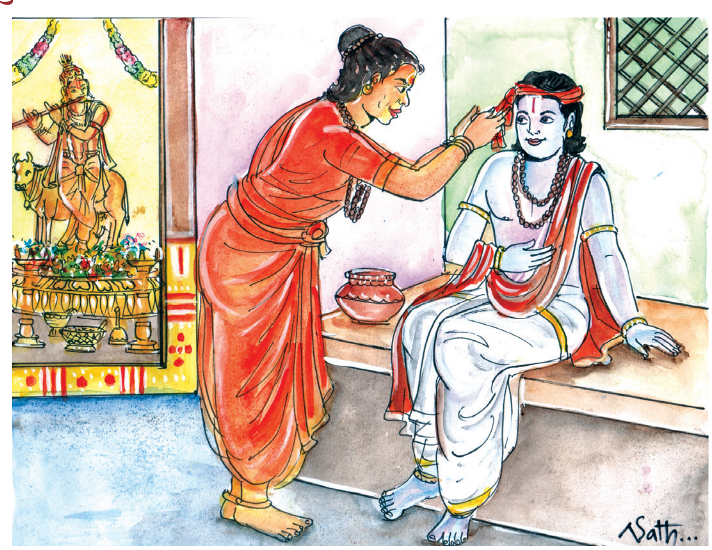

श्रीनिवास राजा आकाश के चरवाहे की कुल्हाड़ी की चोट खाने से आहत हो कर जंगल से निकल कर पूरब की दिशा में कहीं जा रहा था।

उसे काफी श्रम लगा। ऐसे कुछ दूर चल कर ''एरिकम्बट्टू'' नामक गाँव के समीप एक आश्रम के सामने पछाड़ खाकर गिर पड़ा। वकुलमालिका नामक उस आश्रम की पालिका यह पहचान कर अपनी परिचारिकाओं की सहायता से श्रीनिवास को आश्रम में ले जाकर अपनी सेवा-सुश्रूषाओं की सहायता से उसे कतिपय दिनों में स्वस्थ बनाया। वकुलमाता तथा श्रीनिवास के बीच माता-शिशुओं का नाता लग गया। उन दोनों में यह स्पृहा हो पायी थी कि वे पिछले जनम में ''यशोदा और श्रीकृष्ण'' थे! दोनों माँ-बेटे अब सुख से रहने लगे।

पद्मावती श्रीनिवासम्

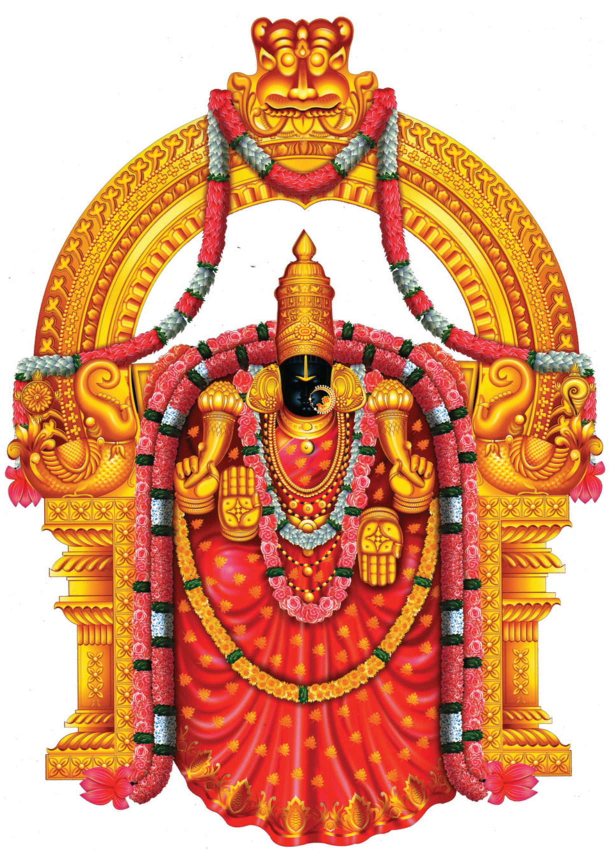

अब श्रीनिवास आश्रम के निर्वहण का भार अपने ऊपर ले लिया। एक दिन वह थोड़े पर सवार हो कर जंगल में जा रहा था। एक पुष्पोद्यान में श्रीनिवास ने एक बालिकाओं का संदोह देख, जो खेल रही थीं। उनकी नायिका बेहद खूबसूरत थी और वह श्रीनिवास को भा गयी। वह कन्या राजा आकाश की बेटी ''पद्मावती देवी'' थी, जो राजा आकाश को ''पुत्रेष्टि'' के दौरान जमीन में कमल के फूल में लेटी मिली थी। कमल के फूल-पर लेटी मिलने से उस कन्याशिशु का नाम ''पद्मावती अथवा अलर-मेल-मंगा (अलमेलुमंगा)'' पड़ा। कुछ नाटकीय परिणामों के अनंतर पद्मावती-श्रीनिवासों का परिणय संपन्न हुआ।

तिरुचानूर

पद्मावतीजी के साथ विवाहानंतर श्रीनिवास पूरे एक साल अपने ससुराल में राजा आकाश के अतिथि बन कर रहा। फिर तिरुमल की तरफ उसका प्रस्थान प्रारंभ हुआ। श्रीनिवास, पद्मावती, विवाह में आयी हुई श्री मन्महालक्ष्मी देवी, राजा तोंडमान् (राजा आकाश का सौतेला भाई) आदियों का प्रिय बृन्द नारायणवरम् से कार्वेटिनगरम्, अप्पलायगुंटा, तिरुचानूर, श्रीनिवासमंगापुरम् से होता हुआ तिरुमलगिरि पहुँच कर वास किया।

इस क्रम में श्री मन्महालक्ष्मी और पद्मावतीदेवी दोनों बहिनें ''तिरुचानूर अथवा अलमेल्मंगापुरम्'' में पद्मसरोवर के किनारे वाले आश्रम में स्थिर रह गयीं। यही आगामी दिनों में तिरुचान : श्रीदेवी (श्री महालक्ष्मी), ऊर (द्रविड़ शब्द) : गाँव तिरुचानूर : श्री महालक्ष्मी का गाँव अथवा अलमेल्मंगापुरम् : फूल के ऊपर लेट कर मिली शिशु का पुरम् : पुर नाम से विख्यात हो गया।

तिरुचानूर पंचमीतीर्थ

तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी के ब्रह्मोत्सवों का ''अवभृथ स्थान''। इसे ''चक्रस्नान'' कहते हैं। इस पवित्र

दिन से देवी माँ के ब्रह्मोत्सवों की परिसमाप्ति हो जाती है। स्थानीय ढंग से इस पवित्र उत्सव को ''तिरुचानूर-पंचमी'' नाम से अत्यंत विशेष पूर्ण ढंग से मनाया जाता है। कई हजार लोग तिरुचानूर में इकट्ठा होकर के देवी माँ को अंजली घटाते हैं। इस दिन श्री पद्मसरोवर में चक्रस्नान चलता है, जिस चक्र के साथ-साथ हजारों लोग, खासकर दम्पती लोग पद्मसरोवर में डुबाकिया लगाते तर जाते हैं।

परिसमाप्ति

पद्मावती-श्रीनिवास-दम्पतियों का इतिहास कलियुग के आरंभ के साथ है। एक पादीय अनाथ कलियुग धर्मदेवता की सहायता-हेतु लोक-हितकारी कुछ महर्षियों ने बलपूर्वक श्री मन्महालक्ष्मी-दंपतियों को इस भूतल पर आह्वानित कर, तिरुमलगिरि-सिंघासन पर आसीन कर, कलियुग का निरीक्षण कर रहे हैं। ये ही श्रीनिवास और पद्मावतीदेवी हैं। वैभव चल रहा है। अस्तु।।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्योहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए 3 महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

धरणी देवी पद्मावती (पुत्रिका) से संभाषण करना :

"हे बेटी! यह क्या है पद्मावती! व्याकुल होकर मूर्छित होकर क्यों सो रही हो। दिन बहुत निकल गया है। तुम्हें इस रूप में देखकर मैं कैसे शांत रह सकती हूँ। अब तुम्हारे मन में जो चिंता है, उस के बारे में बताओ। अपने सुंदर नेत्रों से आँसू बहना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। मेरे मना करने पर भी कल तुम उस उपवन में खेलने गयी थी। वहाँ तुम को किसने देखा है? हे नीरज नेत्री! तुम ने वहाँ पर किसे देखा है? मैं तेरी माँ हूँ। तुम मेरी बेटी हो। हम दोनों के बीच में कोई रहस्य नहीं होना चाहिए। रहस्य को छिपाये बिना बताओ। क्यों डरती हो?" कहने पर भी पद्मावती कुछ नहीं बोली। उस के इस रूप में शोक मनाते देखकर धरणी ने व्याकुल होकर "हे राकेंदुमुखी! तुम्हारे इस दुःख का क्या कारण है? बताओ। हे बेटी! इस धरती पर तुझे छोड कर मुझे कोई आप्त जन नहीं है। मुझ से बढ कर तुझे भी कोई नहीं है। मेरी ओर संशय की दृष्टि से मत देखो। तुम्हारे पिता की कसम बात को छिपाये बिना सच सच बताओ।" इस रूप में बेटी से प्रेम के साथ धीरे धीरे उसे उठाकर, अपनी गोद में बिठाकर, सिर पर हाथ से सहलाते हुए कितने प्रयत्न करने पर भी सर झुका कर कुछ नहीं बोलनेवाली बेटी की तरफ देख कर धरणी सति ने कहा।

"हे पुत्री! यह तुम्हारा पाप नहीं है। मेरा पाप ही इस रूप में करवा रहा है। अब मैं क्या करूँ?" कहते कहते उन की आंखों से आँसू निकल गए। इस रूप में अपने लिए आर्ति बनी माँ को देखकर पद्मावती का ताप और बढ गया। आंखों से आँसू बहाते इस रूप में कहा। "हे माँ! पुष्प वन में जब मैं सखियों के साथ खेल रही थी वहाँ पर एक दिव्य पुरुष घोडे पर बैठ कर आया। उसने मेरी तरफ बुरी दृष्टि से देखा है। तब मैंने गुस्सा करते हुए, उसे क्षमा किए बिना उस पर पथराव करवाया। उस का घोडा नीचे गिर गया। वह कहाँ गया? मुझे मालूम नहीं है। हे माँ! उस का सुंदर नीले रंग का शरीर अब भी मेरी आँखों के सामने नाच रहा है।" इस रूप में पद्मावती के कहने पर सुनकर धरणी देवी ने अपनी बेटी की तरफ देखकर मन में मोद और खेद दोनों होते लज्जित होकर कहा। "मेरी लाडली बेटी! उस युवक ने तुम्हारे मन में ऐसी बुद्धि को क्यों जगाया है। हे वनज पाणी! लोग यह कहेंगे कि वन में जाकर उस वन पुरुष को देखकर उस पर मोहित हो गयी है। पैदा होने के बाद पहली बार किसी पुरुष का स्वरूप इस रूप में तुम्हारे मन में कैसे बैठ

गया हे नीलवेणी! अहो! तुम्हारे पिता मानधनी है। तुम्हारी मनोव्यथा के बारे में सुनेंगे तो उन्हें भी बडी चिंता होगी। हे सुंदरवदन! इस के लिए मैं कौन सा उपाय ढूंढ़ूँ? वन में किसी सुंदर पुरुष को देखकर मन में उस के साथ आकाश राज की बेटी ने प्रेम किया। ऐसी निंदा लोग करेंगे तो हमें सुनना ही पडेगा? अब मैं क्या करूँ? विधि ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया है? लोगों के मुँह पर कैसे ढक्कन लगाया जा सकता है। ऐसे पुरुष से तुम ने प्रेम क्यों किया? धरती पर तुझे और हमें इससे कैसी कीर्ति मिलेगी?'' माँ के इस रूप में कहने पर तब पद्मावती ने हरि के पूर्व वृत्तांत को मन में याद करके इस रूप में कहा। ''हे माँ! तुम्हें अपकीर्ति होगी, ऐसी चिंता मत कीजिए। कहीं तुम ने मन में उसे मनुष्य मात्र समझा है क्या? वह मनुष्य नहीं है। वह साक्षात रमापति है, पुरुषोत्तम है, संपूर्ण प्रकाशवान सर्वज्ञ और शाश्वत पुरुष है। इसलिए मेरा मन उस स्वामी पर लग गया है। यह मेरे लिए कम नहीं है। मेरे कारण पृथ्वी पर कोई अपकीर्ति तुम को नहीं होगी। जो होने का है वह होकर ही रहेगा। हे जननी! सुनो। जिस महामह के दिव्य चक्र ने कौरव बलों का संहार करके हस्तिनापुर में युधिष्ठिर को पट्टाभिषिक्त करके उत्तम पुरुषों का संरक्षण किया, जिस महात्मा के शंखारव ने दैत्य बृंदों के मन में भय पैदा करके देवताओं को आनंद प्रदान किया है, ऐसे शंख, चक्रधारी महापुरुष लीलामानुष विग्रह बन कर कल मुझे वन में प्रत्यक्ष हुए हैं। तब मैंने इस मर्त्य लोकानुसार उस देव का धिक्कार करके पथराव करवाकर उसे भगा दिया। ऐसा अपचार मुझ से हो गया है अब वह विष्णु मुझे क्षमा करके मेरी रक्षा करेगा या नहीं करेगा, ऐसा संशय और भय से मेरी आंखों से आँसू निकल रहे हैं। नहीं तो मुझे कोई काम विकार नहीं है। मेरे श्रीनिवास स्वामी के दिव्य मंगल विग्रह शीघ्र ही मुझे दर्शन देगा तो मैं जीवित रहूँगी। नहीं तो इस धरती पर मैं जी नहीं सकती।'' ऐसा कहते नेत्रों से आंसू बहाते फूलों की शय्या पर फिर से लुढकनेवाली पुत्री को देखकर धरणी देवी ने इस रूप में कहा।

''हे पुत्री! पद्मावती! हरि भक्ति इतनी तुम्हारे चित्त में रहने के कारण ही तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होगी। अब शोक मत मनाओ। वह चक्री तुम्हारे साथ विवाह करेगा। ऐसा एक धर्म देवता ने आकर मुझ से बताया है। उस की बातें झूठ नहीं होंगी। अब तुम धैर्य के साथ रहो।'' ऐसा कहते समय वहाँ पर क्रम से विप्र मुख्य ने अगस्त्य लिंग का रुद्राभिषेक किया। उस के पुण्य तीर्थ, फूल, पत्ते, फल आदि लेकर आते देखा। तब उन के साथ सखियों से प्रिय बातें करते स्नेह के साथ वकुला मालिका वहाँ पर आ गयीं। तब विप्र लोगों ने रुद्राभिषेक के पुण्य तीर्थ को पद्मावती पर छिडकाया।

वकुला मालिका के द्वारा धरणी देवी से बात करना :

तब मंत्राक्षत, फूल, फल को राजा की पुत्री पद्मावती को देकर आशीर्वाद देकर वे लौट गए। विप्रों के लौटने के बाद तुरंत धरणी देवी ने वुकला मालिका को देखा। संतोष और सादरता के साथ वकुला मालिका को एक सोने के पाटे पर बिठाया। पाद धोकर पूजा की। तदुपरांत भक्ति से इस रूप में कहा। ''हे महामाता! कहाँ से आ रही हैं। बताइए।'' पूछने पर वकुला मालिका ने इस रूप में कहा। ''हे माई! शेषाद्री से आ रही हूँ। किन की हो पूछने पर धरणी देवी से बताया।'' ''मैं सदा श्री वेंकटेश्वर की दासी बन कर रहती हूँ। मेरे स्वामी के द्वारा भेजने पर यहाँ पर आयी।'' वकुला की स्नेह भरी इन बातों को सुन कर धरणी देवी ने ''तुम किस काम से आयी हो।'' पूछा। वकुला ने जवाब दिया। ''प्रेम से विवाह की बात

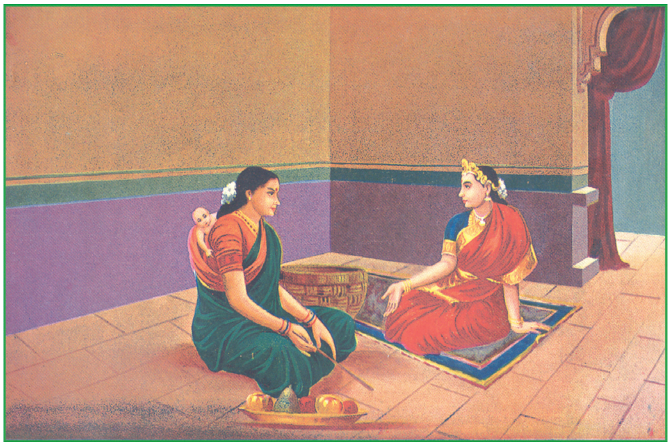

चलाने आयी हूँ।'' कहनेवाली वकुला देवी से धरणी देवी ने ''किस का विवाह तैय करने आयी हो?'' पूछा। तब वकुला ने कहा। ''सुनो हे धरणी देवी! वेंकटेश्वर के लिए आप की कन्या को मांगने आयी हूँ। मुझे विश्वास है कि आप अवश्य देगी।'' ''कुल गोत्र और माता-पिता के बारे में बताओ'' इस रूप में धरणी देवी के पूछने पर वकुला ने इस रूप में कहा। ''कुल क्षत्रिय कुल है। गोत्र वशिष्ट गोत्र है। माँ देवकी है, पिता वसुदेव है।'' इस रूप में वकुला के बताने पर सुन कर धरणी देवी ने हँसते हुए इस रूप में कहा। ''सौंदर्य, भाग्य, सगुणों के बारे में बताओ।'' धरणी देवी के पूछने पर वकुला ने कहा। ''हे सति! अगर तुम मेरे स्वामी के सौंदर्य के बारे में पूछती हो तो वे धरती पर सबसे सुंदर और मन्मथ जैसे हैं। सौभाग्य के बारे में पूछती हो तो उन के भाग्य के बारे में बताना असंभव है। वे तो लक्ष्मीपति हैं। सुस्थिर सुगुणों के बारे में पूछती है तो वे गुरुतर सद्गुणवान हैं। शील के बारे में पूछती है तो वे वेदोक्त सत्धर्म परायण हैं। इस के अतिरिक्त उन के सौंदर्य, सौभाग्य, गुण, शील के बारे में तुम्हारे बेटी को मालूम है। और मैं क्या बताऊँ? हे माई! इससे बढकर तुम्हारी बेटी ने उससे प्रेम किया है।'' वकुला देवी के इस रूप में बोलने पर धरणी ने ''श्री लक्ष्मी साथ में रहने पर विष्णु हमारी कन्या से फिर विवाह कैसे करेंगे। विष्णु ने ऐसा सोचा ही क्यों? यह कैसे उचित हो सकता है। इस में मुझे संशय हो रहा है। अगर मनुष्य सुनेंगे तो हँस पडेंगे?'' इस रूप में धरणी देवी ने संशय से कहा। तब वकुला ने कहा। ''लक्ष्मी अब कोल्हापुर चली गयी है। वहाँ वे भक्तों का संरक्षण कर रही हैं। श्रीहरि के वक्ष पर अब लक्ष्मी नहीं है। इसलिए तुम्हारी कन्या को देखकर चक्री ने प्रेम किया है। आप अपनी कन्या को नारायण को देकर उन का विवाह करवाइए।'' कहते सिरि के कोल्हापुर जानेवाले पूर्व वृत्तांत को विवरण के साथ वकुला ने बताकर उन को मना लिया। आगे वकुला ने इस रूप में कहा। ''तुम्हारी लाडली पद्मावती को पद्मांश संभव समझ कर वे पद्मदललोचन ने विवाह करने के लिए सोचा है। मन से अपने संशय को निकाल दीजिए। विवाह को वैभव के साथ कीजिए। ऐसा

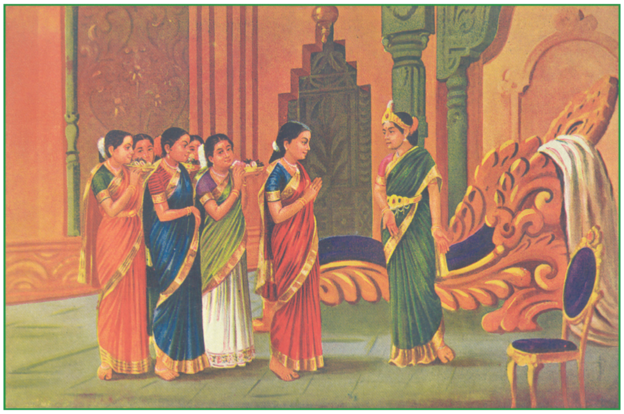

भाग्य किसी और को हो ही नहीं सकता है? आपने बहु पुण्य कार्य किए इसलिए हरि ही आप का दामाद बन रहे हैं।'' कहते वकुला ने संतोष के साथ धरणी देवी को भी संतोष दिया। ''हे सति! मेरे आने का कारण तुरंत ही तुम राजा को बताओ। उठकर अभी चले जाओ।'' तब धरणी देवी ने मोद से जाकर, चिंता में डूबनेवाले राजा को शीघ्र ही शुभ समाचार क्रम से बता दिया। राजा को मुख्य रूप से वकुला को दिखाया। तब राजा ने बडी कृपा से वकुला का आदर किया। तब वकुला मालिका ने आकाश राज की तरफ देखकर ''हे राजन! आप के घर आकर जो कुछ मैंने शुभ समाचार दिया, उस को आपने धरणी देवी के द्वारा सुन लिया। अभी विवाह के लग्न को तैयर कर लीजिए।'' वकुला की इन बातों को सुन कर आकाश राज ने बडे आनंद से इस रूप में कहा। ''हे वकुला! मेरी लाडली के विवाह को लेकर जो चिंता मुझे हुई थी। वह अब दूर हो गयी। आप जैसे आप्त इस भूतल में हमारे लिए और कोई नहीं है। आप के इस हित के बारे में भूलना क्या संभव है?''

इस रूप में अनेक प्रकार से वकुला से विनति करके आकाश राज ने पद्मावती के पास जाकर उसे गोद में बिठाकर सिर पर हाथ से सहलाते हुए, गाल पर चूमते हुए, चुबुक को पकड कर प्रेम से इस रूप में कहा। ''सुनो री पद्मावती! तुम अब मन से चिंता को दूर करो। तीनों लोकों पर शासन करनेवाले वनजाक्ष के साथ अब तुम्हारा विवाह कराऊँगा।''

क्रमशः

देवी माँ का कुंकुमार्चन

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

हमारे हिन्दू शास्त्रों में सभी देवी और देवताओं को प्रसन्न करने हेतु विविध तरह कि पूजा विधि का विधान बताया गया है। इस विधि विधान से पूजा, अर्चन करने से हमारी मनोकामना पूर्ण होती है। आज का हमारा विषय है, कुंकुमार्चन है।

कुंकुमार्चन, जिसे ''कुमकुम अर्चन'' भी कहा जाता है, **देवी-देवताओं की पूजा में कुमकुम का उपयोग करके किये जाने वाला एक अनुष्ठान है**। यह मुख्य रूप से देवी दुर्गा और अन्य देवियों की पूजा में किया जाता है, विशेष रूप से नवरात्रि और दीपावली के महीनों में कुंकुमार्चन पूजा होती है।

कुंकुमार्चन का अर्थ :

- **कुमकुम** : कुमकुम एक लाल रंग का पाउडर है जो आमतौर पर माथे पर तिलक के रूप में लगाया जाता है।
- **अर्चन** : अर्चन का अर्थ है पूजा या सम्मान देना।
- **कुंकुमार्चन** : अर्थात देवी माँ का कुंकुम से पूजा, अर्चना करके सम्मान देना और देवी माँ को प्रसन्न करना।
- **अनुष्ठान** : कुंकुमार्चन में देवी-देवताओं की मूर्तियों या तस्वीरों पर कुमकुम का लेप लगाया जाता है, और साथ ही मंत्रों और स्तोत्रों का पाठ किया जाता है।

कुंकुमार्चन का महत्व :

- **देवी की पूजा** : कुंकुमार्चन देवी दुर्गा और अन्य देवियों की पूजा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो शक्ति, समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक हैं।
- **नवरात्रि और दीपावली** : यह अनुष्ठान विशेष रूप से नवरात्रि महीने और दीपावली के दौरान किया जाता है, जब देवी की पूजा का विशेष महत्व होता है।
- **पारिवारिक और सामाजिक** : कुंकुमार्चन अक्सर पारिवारिक और सामाजिक रूप से आयोजित

किया जाता है, जिसमें महिलाएँ देवी की पूजा में भाग लेती हैं।

कुंकुमार्चन कैसे किया जाता है?

- देवी की मूर्ति या तस्वीर को साफ किया जाता है और उसे एक पवित्र स्थान पर रखा जाता है।
- कुमकुम को देवी की मूर्ति या तस्वीर पर लगाया जाता है, और साथ ही मंत्रों और स्तोत्रों का पाठ किया जाता है।
- पूजा के अंत में, आरती की जाती है और प्रसाद वितरित किया जाता है।

कुंकुमार्चन का उद्देश्य :

- देवी का आशीर्वाद प्राप्त करना।
- सुख, समृद्धि और सौभाग्य की प्राप्ति।
- परिवार और समाज में शांति और सद्भाव।

कुंकुमार्चन करने का शास्त्रीय आधार

देवी की उपासना में कुमकुमार्चन का महत्व पूर्ण स्थान है। अनेक स्थानों पर नवरात्रि में भी विशेष रूप से यह विधि करते हैं।

1. देवी की मूर्ति पर कुमकुमार्चन करने की पद्धतियाँ

पद्धति 1 : 'देवी का नामजप करते हुए एक चुटकीभर कुमकुम (रोली), देवी के चरणों से आरंभ कर देवी के सिर तक चढाएँ अथवा देवी का नामजप करते हुए उन्हें कुमकुम से आच्छादित करें।'

पद्धति 2 : कुछ स्थानों पर देवी को कुमकुमार्चन करते समय कुमकुम केवल चरणों पर अर्पित किया जाता है।

2. देवी की मूर्ति पर कुमकुमार्चन करने का शास्त्रीय आधार

'मूल कार्यरत शक्तितत्त्व की निर्मित लाल रंग के प्रकाश से हुई है, इस कारण शक्तितत्त्व के दर्शक के रूप में देवी की पूजा कुमकुम से करते हैं। कुमकुम से प्रक्षेपित गंध-तरंगों की सुगंध की ओर ब्रह्मांडांतर्गत शक्तितत्त्व की तरंगें अल्प कालावधि में आकृष्ट होती हैं, इसलिए मूर्ति में सगुण तत्त्व को जागृत करने हेतु लाल रंग के दर्शक तथा दैवीतत्त्व को प्रसन्न करनेवाली गंध-तरंगों के प्रतीक के रूप में कुमकुम-उपचार (शृंगार) को देवी पूजन में अग्रगण्य स्थान दिया गया है। मूल शक्तितत्त्व के बीज का गंध भी कुमकुम से फैलनेवाली सुगंध से सामर्थ्य दर्शाता है, इसलिए देवी को जाग्रत करने हेतु कुमकुम के प्रभावी माध्यम का प्रयोग किया जाता है।'

3. देवी की मूर्ति को कुमकुमार्चन करने के सूक्ष्म-स्तरीय लाभ

कुमकुमार्चन करने से देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है, नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है, और सकारात्मकता का संचार होता है। यह आध्यात्मिक विकास, ज्ञानोदय और भक्ति में वृद्धि के लिए भी माना जाता है। कुमकुमार्चन देवी-देवताओं को प्रसन्न करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का एक शक्तिशाली तरीका है।

कुंकुमार्चन के लाभ :

- **आध्यात्मिक विकास :** कुमकुमार्चन करने से आध्यात्मिक विकास और ज्ञानोदय होता है।
- **भक्ति में वृद्धि :** यह देवी-देवताओं के प्रति भक्ति और विश्वास को बढ़ाता है।
- **नकारात्मक ऊर्जा से सुरक्षा :** माना जाता है कि कुमकुमार्चन नकारात्मक ऊर्जा और बाधाओं को दूर करता है।
- **समृद्धि और स्वास्थ्य :** यह समृद्धि, स्वास्थ्य और प्रसन्नता का आशीर्वाद लाता है।

- **पापों का नाश :** कुमकुमार्चन करने से व्यक्ति के पापों का नाश होता है।
- **सकारात्मकता :** यह घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और मन को शांत करता है।
- **कार्य सिद्धि :** देवी-देवताओं का आशीर्वाद मिलने से कार्यों में सफलता मिलती है।

कुमकुमार्चन कैसे करें :

1. देवी-देवता की मूर्ति या तस्वीर पर कुमकुम (हल्दी और अन्य सामग्रियों से बना लाल पाउडर) ओर रोली चढ़ाएँ।
2. देवी-देवता के मंत्रों का जाप करें।
3. कुमकुम को प्रसाद के रूप में ग्रहण करें।
4. कुमकुम को अपने माथे पर लगाएँ।

महत्वपूर्ण बातें :

• कुमकुम को देवी-देवताओं को अर्पित करने के बाद, उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

• कुमकुम को दोबारा पूजा में उपयोग नहीं करना चाहिए।

• कुमकुम को आप अपने माथे पर या सिंधूर के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

• कुमकुमार्चन के बाद, देवी-देवताओं से आशीर्वाद और कृपा की प्रार्थना करनी चाहिए।

कुंकुमार्चन मंत्र

कुंकुमार्चन मंत्र इस प्रकार है। देवी (जैसे दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती) को प्रसन्न करने के लिए कुमकुम (सिंधूर) से की जाने वाली पूजा में प्रयोग किया जाता है। यह मंत्र देवी की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए है। विभिन्न देवी-देवताओं के लिए अलग-अलग मंत्र हो

सकते हैं, लेकिन सामान्यता: कुंकुमार्चन के लिए ''ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं'' ''देवी'' ''नमः'' का जाप किया जाता है, जहाँ ''देवी'' के स्थान पर देवी का नाम लिया जाता है। विभिन्न देवी-देवताओं के लिए कुछ विशिष्ट मंत्र इस प्रकार हैं :

दुर्गा : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दुर्गायै नमः, ॐ ह्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः।

लक्ष्मी : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

सरस्वती : ॐ ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः, ॐ ऐं सरस्वत्यै ऐं नमः।

अन्य देवी-देवताओं के लिए :

- विभिन्न देवी-देवताओं के लिए, आप ''देवी'' के स्थान पर उनका नाम जोड़कर मंत्र का जाप कर सकते हैं। उदाहरण के लिए ''ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गणेशाय नमः'' गणेश जी के लिए...

कुंकुमार्चन विधि :

1. देवी की प्रतिमा या चित्र के सामने कुमकुम रखें। 2. मंत्र का जाप करते हुए, कुमकुम को देवी को अर्पित करें। 3. प्रत्येक मंत्र के बाद, देवी को कुमकुम का तिलक लगाएँ। 4. देवी को फूल, धूप, प्रसाद अर्पित करें। 5. हो सके तो इस दौरान उपवास रखे, वरना एक समय तक सिर्फ सात्विक भोजन ही ले। 6. पूजा के अंत में, देवी से आशीर्वाद मांगें।

देवी पद्मावती की लक्ष कुंकुमार्चन पूजा :

आंध्रप्रदेश, तिरुपति में कार्तिक माह में देवी पद्मावती का ब्रह्मोत्सव होता है, तो ब्रह्मोत्सव का सबसे पहला विधान लक्ष कुंकुमार्चन से ही शुरू होता है। माँ पद्मावती इस विधान से बहुत प्रसन्न होते है। देवी देवता को प्रसन्न करने के लिये कुंकुमार्चन सर्वश्रेष्ठ पद्धति है।

कुंकुमार्चन से साधक को क्या प्राप्त होता है?

नवरात्रि की विशेषता : दीपावली में देवी को प्रसन्न करने हेतु और अपना लक्ष सिद्ध करने हेतु साधक कुंकुमार्चन विधि करता है तो देवी माँ साधक कि हर मनोकामना पूर्ण करते है, परिवार में सुख, शांति, श्रीलक्ष्मी, धन धान्य, पद-प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य और आध्यात्मिकता प्राप्त होती है। अंत में देवी माँ के ढेर सारे आशिर्वाद भी प्राप्त करता है। माँ के आशिर्वाद से दुनिया का कोई भी कठिनाइयों का आसानी से सामना करके अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

और सबसे विशेष बात हमारे जीवन के अंत में मोक्ष के अधिकारी भी बन सकते है।

सितंबर-2025 महीने का क्विज-38 के समाधान

1) ब्रह्मोत्सव, 2) गरुड़ वाहन,

3) गरुड़ का चित्र, 4) लाल चंदन,

5) मोहिनी अवतार में पालकी में,

6) एस.वी.बी.सी. - श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल,

7) श्री गोविंदराजस्वामी, 8) महाबली,

9) शुक्राचार्य, 10) देवी नवरात्रि उत्सव,

11) विजयदशमी, 12) नारायणगिरि,

13) उपमन्य, 14) सूर्यप्रभावाहन, चंद्रप्रभावाहन,

15) सुदर्शन चक्र.

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

संख्या 81 तिरुक्कालत्तिदेव यादवराय के 19वें शासन वर्ष (सन् 1209 - 10 ई.) से संबन्धित है (पृ. 103, जिल्द I)। इसमें एक आदेश की सूचना है जिसके अनुसार तिरुवेंकटमुडैयान भगवान को 'कुडवूर' गाँव पूर्ण रूप से अर्पित किया गया है। यह तिरुमल स्थानत्तार की प्रार्थना पर संपन्न हुआ है। स्थानत्तार को इस संबन्ध में अविलालि सभा का अनुमोदन भी मिला है। यह पूर्वदान को परिपूर्ण करने की दिशा में ही हुआ है। प्रमुखतः यह स्थायी अनुकूल देवदान ही है। यह भी सूचित किया गया था की भूमि की परिधि में विष्णु के सुदर्शन चक्रों से अंकित पत्थरों को लगाया जाये ताकि सभी को यह मालूम हो कि वह मंदिर की जायदाद है। यह भूदान पाण्ड्य राजा के द्वारा सन् 1254 ई. में दिया गया (संख्या 43) और बाद का ही है।

संख्या 82 में तिरुक्कालत्तिदेव के पुत्र वीर राक्षस यादवदेव के द्वारा कडवूर-नाडु की भूमि का देवदान संपन्न हुआ है। यह काम चोल राजा के 15वें शासन वर्ष में किया गया। शायद इसका समय कुलोत्तुंग चोल - III का समय है (सन् 1193 ई.)। इसी प्रकार का एक और अनुदान श्रीकालहस्तीश्वर के लिए भी कुलोत्तुंग चोल III के शासन वर्ष 15 में हुआ है (पृ. 104, जिल्द I)। यह ''तिरुमंतिर - तिरुप्पोनकम्'' के लिए है।

संख्या 84 में 64 गायें और एक सांड (वृषभ) का उल्लेख है। यह देवदान वीर नारसिंहदेव यादवराय की रानी यादवराय-नाच्चियार द्वारा राजा के 12वें राज्यकाल वर्ष में (सन् 1217 ई.) दिया गया है (पृ. 105, जिल्द I)। यह श्री वेंकटेश्वर भगवन के सामने रखी गयी दो दीप ज्योतियों के लिए घी से संबन्धित है। उसी रानी के एक और देवदान का उल्लेख संख्या 85 में है। इसके अनुसार 32 बडी गायें और एक बैल (वृषभ) का अनुदान गोविंदराज स्वामी के मंदिर के लिए भी संपन्न किया गया है। इसका समय राजा के राज्यकाल वर्ष 15 है (सन् 1220 ई.)।

[[यादवराय वंश के तीन राजाओं की परंपरा में - तिरुक्कालत्तिदेव, उनके पुत्र वीर - राक्षस और वीर नारसिंह देव - हम उनके राज्य वर्षों में एक प्रकार का अतिक्रमण पाते हैं (यथा पृ. 103 - 105, जिल्द I)। शायद वीर राक्षस की मृत्यु उनके यौवन काल में ही हुई होगी। इसका आधार एक ही है कि बाद के समय में इनका उल्लेख किसी आदेश में नहीं मिला है। तिरुक्कालत्तिदेव, घट्टिदेव और राजमल्ल

ने नेल्लूर और अन्य प्रांतों पर शासन किया हो। इसके परिणाम में वीर नारसिंह देव ने प्राचीन तोंडममंडल के दक्षिणी प्रान्त पर राज्य किया होगा।]]

संख्या 86 में हम पाते हैं कि रानी यादवराय-नाच्चि ने श्री गोविंद पेरुमाल को पइंडप्पल्लि नामक गाँव का आधा भाग देवदान में दिया है। यह उस रानी के द्वारा स्थापित आणि मास में संपन्न होनेवाले उत्सव के लिए है। वह भी ''कूटम'' (शिखरम्- एक अलंकरण के लिए उपयोग में आनेवाला कलश) के लिए है जो चतुर्मुखी रथ के ऊपर रखा जाता है। इसके साथ अन्य उपयोगी सामग्री के लिए भी इसका उपयोग होता रहा है। बाकी बचा हुआ गाँव श्री वेंकटमुडैयान के श्रीभण्डारम् के लिए था। यह रानी द्वारा अर्पित दान वीर नारसिंह यादवराय के 30वें राज्य वर्ष में (सन् 1235 ई.) दिया गया (पृ.106 और 118, जिल्द I)।

संख्या 87 में 32 गायों के दान की सूचना है। यह दान एक ज्योति के लिए तिरुवेंकटमुडैयान भगवान के लिए मलैकिनियनिर्न्रार बनाम तिरुवेंकटनाथन् द्वारा प्रदत्त है। यह वीर नारसिंहदेव यादवराय के 34वें राज्य वर्ष में (सन् 1239 ई.) प्रदान किया गया है।

संख्या 88 में उल्लिखित है वीर नारसिंहदेवराय का उनके अपने शासन काल के 40वें वर्ष में (सन् 1245 ई.) श्री वेंकटेश्वर मंदिर के ''स्थानत्तार'' को मंदिर के निमित्त दान। उसे सीधे ''देशान्तरी'' (एक नया व्यक्ति जो दूसरे प्रांत से आया हो) तिरुप्पुल्लाणिदासर को देने का आदेश है। क्योंकि उसने केन्द्रीय मूर्ति का पुनरुद्धरण कार्य आरंभ करने से पहले बाहरी दीवारों

पर लिखे गये शिलालेखों को पुनः लिखने के कार्य का दायित्व लिया है। यह उत्तरी दीवार से संबन्धित कार्य है। राजा का आदेश अर्पशी मास (तमिल मास) में दिया गया। यह कार्य राजा के राज्यकाल वर्ष 40 में संपन्न किया गया। पुनरुद्धरण का कार्य और पुनर्लेखन कार्य दोनों पूर्ण हो गये हैं। यह पूरा कार्य छः महीनों में ही हुआ है। राजा के आदेश के अनुसार चार शिलालेखों का पुनर्लेखन हुआ है। वे क्रमशः संख्या 8, 9, 14 और 19 हैं। इनका उल्लेख पूर्व पृष्ठों में हुआ है (पृ.142 से 144 तक)।

संख्या 89 श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिर का है। यह वीर नारसिंहदेवराय यादवराय के 50वें राज्य वर्ष का है (सन् 1255 ई.)। इसमें उल्लिखित है कि उस वर्ष से श्रीवैष्णव आचार्य एमपेरुमानार रामानुज की मूर्ति के लिए श्रीवैष्णवों ने ज्योति कलश और पुष्प मालाएँ अर्पित करना आरंभ किया है। लेकिन संख्या 79-D में सूचित है कि आचार्य रामानुज की मूर्ति की प्रतिष्ठा सौम्य वर्ष में हुई है (अर्थात् सन् 1248-49 ई.)। उक्त ज्योति और पुष्पमाला कैंकर्य योजना उससे छः वर्ष बाद की गयी।

संख्या 90 में तिरुपति के श्रीवैष्णवों के एक दस्तावेज का उल्लेख है। वीर नारसिंह यादवराय के 51वें राज्य वर्ष में यह दस्तावेज प्रस्तुत किया गया (सन् 1256 ई.)। उसके अनुसार उस वर्ष के आडि मास में एक फूल वन (पुष्पवाटिका) की योजना आरंभ की गयी। उसका नाम है - ''यादव नारायणन्''। उसमें एक तालब का निर्माण भी है जिसके पानी से वाटिका की सिंचाई होगी। उसमें लाल कमलों को विकसित करने की बात भी है। यह कार्य पेरिय-मांबट्टु गाँव से संबद्ध है। उस गाँव का वेंकटेश्वर भगवान के लिए यह दान है और साथ साथ गोविंदराज के लिए भी और तिरुपति में स्थित गोविंदराज पुष्करिणी के लिए भी है।

क्रमशः

(गतांक से)

नव नंदियों का महिमान्वित क्षेत्र नंद्याल

- डॉ आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

2. नाग नंदि :

यह मंदिर भी नंद्याल शहर में स्थित है। बस के अड्डे से सिर्फ दो सौ मीटर की दूरी पर है। मूलतः यह मंदिर हनुमान का मंदिर है। इसे बयटि पेट हनुमान मंदिर कहा जाता है। हनुमान के साथ साथ गर्भालय में नाग नंदि की प्रतिष्ठा की गयी है। माना जाता है कि गरुड़ के आक्रमण से अपने को बचाने के लिए नागों ने यहाँ पर शिव भगवान को लेकर तप किया था। तब शिव भगवान उन्हें दर्शन देकर अभय दिया था। इसलिए यहाँ के शिव लिंग को नाग नंदीश्वर कहा जाता है। इस मंदिर में दसहरा, शिवरात्रि, श्रीरामनवमी के दौरान विशेष उत्सवों का आयोजन किया जाता है। नाग दोष, सर्प दोष आदि के परिहार के रूप में यहाँ पर पूजाएँ करने की परंपरा है।

3. सोम नंदि :

यह मंदिर भी नंद्याल शहर में स्थित है। नंद्याल में पहले जहाँ आत्मकूर बस का अड्डा था, वहाँ पर मुख्य सडक के साथ ही सट कर यह मंदिर दिखाई देता है। यह प्राचीन मंदिर है। चिन्न चेरुवु (छोटा तालाब) जानेवाले रास्ते में पडता है। पूरा कथाओं के अनुसार चंद्र ने शिव से वरदान प्राप्त करने यहाँ पर तप किया था। शिव भगवान नंदि वाहन पर आरूढ़ होकर उन्हें दर्शन दिए थे। इस मंदिर में रहने वाली शिव की पत्नी का नाम श्री सोमेश्वरी देवी है। महाशिवरात्रि यहाँ पर धूमधाम से मनाया जाता है। सोमानंदीश्वर आरोग्य प्रदाता के रूप में प्रचलित है। भक्तगण अपने अपने रोग निवारण के लिए

यहाँ पर पधारते हैं। पूजा और अर्चना आदि के अतिरिक्त रात काटते हैं। जिससे उन्हें अवश्य स्वस्थ्य लाभ होता है। वैसे यह मंदिर अति प्राचीन है। शहर में रहने के कारण बडी संख्या में भक्त लोग नित्य सोमेश्वर के दर्शन करते हैं।

4. शिव नंदि या रुद्र नंदि :

यह मंदिर नंद्याल शहर से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित कडमल काल्व नामक गाँव में स्थित है। यह भी प्राचीन मंदिर है। काफी कुछ शिथिल होने की अवस्था में है। पूरा कथाओं के अनुसार कुरुक्षेत्र युद्ध के बाद पांडवों ने इस मंदिर के दर्शन किए थे। युद्ध में द्रोणाचार्य आदि ब्राह्मणों की हत्या करने के दोष से मुक्त होने के लिए पांडवों ने इस मंदिर में छोटे छोटे पांच मंदिरों का निर्माण किया। उन में शिव लिंगों की स्थापना भी की थी। चालुक्य राजाओं के समय में इस मंदिर का विकास हुआ था। मंदिर के पास स्थित नीम का पेड और अश्वत्थ पेड को काफी महिमावान माना जाता है। महाशिवरात्रि दौरान यहाँ उत्सव मनाया जाता है। दोष निवारण के लिए इस मंदिर में अर्चक लोग पूजा करते हैं।

5. कृष्ण नंदि या विष्णु नंदि :

यह शिव नंदि से लगभग पाँच किलोमीटर की दूरी पर और महा नंदि से उत्तर में चार किलोमीटर की दूरी पर जंगल में है। इस के बगल में ही तेलुगु गंगा का मुख्य नाला बहता है। यहाँ पर जंगल का अत्यंत अह्लाद वातावरण बना रहता है। पुराणों के अनुसार श्री महाविष्णु ने यहाँ पर शिव भगवान से वर प्राप्त करने यहाँ पर तप किया था। शिव भगवान नंदि पर आरूढ़ होकर दर्शन देकर आशिर्वाद दिया था। इस मंदिर की पुष्करिणी है। इस के पानी से खेतों की सिंचाई की जाती है। मंदिर में संगमरमर पत्थर से बनाया गया नंदि है। माना जाता है कभी रात के समय शेर ने इसे बैल समझकर वार किया था। इस के शरीर पर शेर के नाखूनों के दब्बे दिखाई देते हैं। यहाँ का नंदि अति सहज दिखाई देता है। मानो सचमुच ही वहाँ कोई बैल बैठा हुआ है। वैवाहिक जीवन से संबंधित दोष निवारण पूजाएँ इस मंदिर में किया जाता है। अविवाहित लोगों के लिए विवाह होने की पूजाएँ की जाती हैं। दांपत्य जीवन के दोषों को दूर करने के लिए दंपति यहाँ पर आकर पूजा करते हैं। यह राधा-कृष्ण का महिमान्वित क्षेत्र माना जाता है।

6. महा नंदि :

नव नंदियों में सब से प्रमुख मंदिर महा नंदि है। नंद्याल शहर से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी नलमल जंगल के आरंभ में है। महा नंदि अपनी पुष्करिणियों और पौराणिक पृष्ठभूमि के लिए प्रसिद्ध है। यह नंदिकेश्वर का जन्म स्थल ही माना जाता है। साथ ही यहाँ के मंदिर में गो पाद की मुद्रांकित शिव लिंग मूर्ति है। शिव लिंग इस मंदिर का बिखरा हुआ है। शिव लिंग से पानी का प्रवाहित होना साफ दिखाई देता है। यहाँ की मुख्य पुष्करिणी रुद्र गुंड है। रुद्र गुंड के जल स्रोतों के बारे में रहस्य बना हुआ है। साल भर में एक ही गति से इस में पानी बहता है। साथ ही इस पुष्करिणी का पानी अत्यंत स्वच्छ, निर्मल, स्पटिक और पारदर्शी होता है। पुष्करिणी के एक कोने में स्थित नंदि के मुँह से मुख्य जल स्रोत प्रवाहित होता साफ देख सकते हैं। हाथ लगाकर उस का अनुभव भी किया जा सकता है। पुष्करिणी के बीचों बीच एक मंडप बना हुआ है। उस में पांच शिव लिंगों की स्थापना की गयी है। ये पंच भूतों के प्रतीकों के रूप में माने जाते हैं। पृथ्वी, वायु, आकाश, जल और अग्नि के रूप में माना जाता है। यहाँ पर भक्तों का कोलाहल अधिक होता है। दूर दूर से और विविध राज्यों से भक्त यहाँ पर आते हैं। यह मंदिर पांडवों के वंशज राजा नंदन के द्वारा निर्मित किया गया था। नंद्याल, नंदिकोट्कुर और महानंदि प्रदेशों को मिलाकर उस राजा ने 'नंदवरम' या 'नंदि मंडल' राज्य के नाम से शासन किया। नंदन वंशी राजाओं के उपरांत चोल राजाओं ने इस पर शासन किया था। मंदिर के गोपुर के साथ साथ विशाल मंटप बनाये गए हैं। मंदिर के बाहर के प्राकार में विष्णु कुंड और ब्रह्म कुंड नामक दो और पुष्करिणियाँ हैं। अंदर वाली रुद्र कुंड से इन में पानी आता है। तीनों पुष्करिणियों में भक्तगण पुण्य स्नान करते हैं।

मंदिर का शिव लिंग स्वयंभू माना जाता है। शिव लिंग पर गाय के पाद की मुद्रा है। इससे शिव लिंग बिखरा और टूटा हुआ दिखाई देता है। शिव की पत्नी को इस मंदिर में कामेश्वरी देवी के रूप में पुकारा जाता है। मंदिर के अंदर वाले प्राकार में ही श्री कोदंडराम स्वामी का मंदिर और नव ग्रहों का मंदिर भी बने हैं।

इस मंदिर का निर्माण विशेष वास्तु के साथ किया गया है। इस विशाल मंदिर के चारों तरफ अनेक शिला खंभों के साथ अनेक बरामदें बनाये गए हैं। ये बरामदें जैसे मंटप यात्रियों के लिए बहुत उपयोगी हैं। ठहरने के साथ साथ इन में रसोई आदि बना सकते हैं। इन की संख्या और खंभों की संख्या आदि को सांख्य शास्त्र के अनुसार जो मनुष्य के शरीर के अंगों के साथ मेल मिलाप होता है, बनाया गया है। यह जानकर बडा आश्चर्य होता है। मंदिर के चारों तरफ ऐसे पच्चीस बरामदे जैसे मंटप हैं। शिव लिंग को जीव के रूप में मानने पर बाकी चौबीस बरामदों के साथ वास्तु संबंधी यह गिनती सही ठहरती है। उन में पांच ज्ञानेंद्रीय... कान, चमडी, आँख, जीभ और नाक; पांच कर्मेंद्रीय- मुँह, हाथ, पैर, गूदा, पुनरुत्पत्ति के अंग; साथ ही... पंच भूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश; उसी रूप में पांच क्रियाएँ... सुनना, स्पर्श करना, देखना, रुचि पहचानना और सूंघना... इन के साथ अंतःकरण की क्रियाएँ चार-- करानेवाले मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार इस रूप में ये सब मिलकर चौबीस हो जाते हैं। इन के प्रतीक के रूप में इन बरामदों का निर्माण किया गया है। ऐसी मान्यता है। मंदिर की चारों दिशाओं में चार गोपुर बनाये गए हैं। ये मनुष्य के अंतःकरण चतुष्टय की ओर इशारा करते हैं। यानी मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की ओर इशारा करते है। इन के द्वारा ही मनुष्य की सारी क्रियाएँ संचालित होती हैं।

यहाँ के लोगों का विश्वास यह भी है कि यहाँ की तीनों पुष्करिणियाँ भी प्रतीकों के रूप में बनायी गयी है। जो इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाडियों की ओर इशारा करते हैं। जिनके द्वारा मनुष्य की शक्ति, प्राण और ज्ञान प्रवाहित होता है। वैसे इन तीनों पुष्करिणियों में पवित्र जल प्रवाहित होता है। इस रूप में यह क्षेत्र पूर्ण मनुष्य के शरीर के अनुकरण में निर्मित हुआ है।

मुख्यालय के रुद्र कुंड सुषुम्ना नाडी का प्रतीक है। जो मुख्य जल स्रोत बना हुआ है। विष्णु और ब्रह्म कुंड क्रमशः इडा और पिंगला नाडियों के प्रतीक है। मनुष्य को प्राण तत्व प्रदान करनेवाले इन कुंडों के जल में सचमुच ही पवित्र जीव तत्व बसा हुआ है।

यहाँ का मुख्य त्योहार महाशिवरात्रि है। बहुत बडे मेले के रूप में यह मनाया जाता है। उस दौरान शिव पार्वती के कल्याण के साथ साथ अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी यहाँ पर किया जाता है। शिव और पार्वती को यहाँ मयूर वाहन में बिठाकर ग्रामोत्सव भी किया जाता है।

7. विनायक नंदि :

यह मंदिर महानंदि के प्राकार के बाहर एक अलग प्राकार में बसा हुआ है। भक्त जन महानंदीश्वर के दर्शन करने के बाद श्री कोदंडराम स्वामी के दर्शन पूरा करके विनायक नंदीश्वर के दर्शन करते हैं। महानंदि मंदिर की आग्नेय दिशा में यह मंदिर है। पूरा कथाओं के अनुसार इस मंदिर के शिव लिंग को साक्षात शिव पुत्र विनायक ने नंदिकेश्वर की प्रार्थना पर उन के शरीर परिवर्तन के शुभ संदर्भ प्रतिष्ठित किया था। महानंद के नंदिकेश्वर या शिव भगवान के वाहन नंदि बनने के शुभ अवसर पर हुआ था। विनायक नंदि में खासकर गणेश चतुर्थी, महाशिवरात्रि दौरान विशेष पूजाएँ की जाती हैं। किसी भी शुभ कार्य करने के पहले

भक्त जन इस मंदिर में आकर विनायक नंदीश्वर के दर्शन करके शुभकामनाएँ मांगते हैं। विनायक नंदीश्वर की कृपा से उन के सारे शुभकार्य सफल होते हैं, ऐसा विश्वास है।

8. गरुड़ नंदि :

यह मंदिर महा नंदि मंदिर के ठीक सामने मंदिर से नंद्याल के रास्ते पर स्थित है। यह महानंदि मंदिर की पश्चिम दिशा में स्थित है। यह मान्यता है कि महानंद के नंदिकेश्वर बनने के शुभ अवसर वहाँ पर श्री महाविष्णु के वाहन गरुड़ भी पधारे थे। उस गरुड़ की प्रार्थना पर महाशिव यहाँ गरुड़ नंदीश्वर के रूप में बसे हैं। एक और मान्यता है कि गरुड़ अपनी माताजी विनता की दास्य-श्रृंखलाओं को तोडने के लिए शिव भगवान को लेकर तप किया था। तब शिव नंदिकेश्वर पर आरूढ़ होकर गरुड़ को दर्शन दिए थे। तब गरुड़ की प्रार्थना पर शिव भगवान नंदिकेश्वर समेत यहाँ गरुड़ नंदीश्वर के रूप में बसे थे। भक्त जन यहाँ विविध मनौतियों को लेकर आते हैं। माना जाता है कि गरुड़ नंदीश्वर भक्तों की कामनाओं की पूर्ति करते हैं।

9. सूर्य नंदि :

यह मंदिर नंद्याल शहर से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर तम्मड पल्ली नामक गाँव में स्थित है। महानंद के नंदिकेश्वर बनने के उपलक्ष्य में वहाँ पर सूर्य भगवान भी पधारे थे। उन की प्रार्थना से शिव भगवान यहाँ पर सूर्य नंदीश्वर के रूप में बसे हैं। इस मंदिर की विशेषता है कि सूर्योदय के समय सूर्य की किरणें शिव लिंग पर गिरती हैं। नित्य इस रूप में सूर्य भगवान शिव भगवान का अभिषेक करते हैं। यह मंदिर महा नंदि से आठ किलोमीटर दूरी पर है। मुख्य सडक से थोडा अंदर यह मंदिर बसा हुआ है। यह भी पुराना मंदिर है। महाशिवरात्रि पर्व यहाँ पर धूमधाम से मनाया जाता है।

नंद्याल शहर के इर्दगिर्द और महानंदि क्षेत्र के समीप ये नव नंदियाँ बसे हुए है। नंदि मंडल कहलानेवाला यह प्रदेश इसलिए भी पवित्र और पुण्य स्थल माना जाता है कि इस क्षेत्र में महानंद ने नंदिकेश्वर के रूप में रूपांतरित होकर शिव भगवान के मुख्य गण और वाहन के रूप में श्रेय प्राप्त किया था।

कार्तिक मास और नव नंदियों के दर्शन :

विष्णु भगवान अगर वैकुंठ वासी हैं तो शिव भगवान कैलास वासी हैं। विष्णु भगवान को वेंकटाचल क्षेत्र प्रिय क्षेत्र है तो शिव भगवान को यह 'नंदि मंडल' प्रिय क्षेत्र बना हुआ है। नौ रूपों में नौ शक्तियों के साथ शिव भगवान यहाँ पर दर्शन देते हैं। इसी से इन के महत्व को जाना जा सकता है। इसी पुण्य स्थल में शिव भगवान ने महानंद के तप से प्रसन्न होकर उसे अपने वाहन के रूप में स्वीकार किया था। साथ ही महानंद को नंदिकेश्वर बना लिया था। नंदिकेश्वर की प्रार्थना और उस संदर्भ में वहाँ पर उपस्थित देवताओं की प्रार्थना पर शिव भगवान यहाँ पर नौ रूपों में बसे हैं। यहाँ के लोगों की मान्यता है कि कार्तिक मास, जो शिव और केशव के लिए अत्यंत प्रिय मास माना जाता है। साथ ही सारे मासों से भक्ति और आध्यात्मिक साधाना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मास माना जाता है, ऐसे कार्तिक मास में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त के बीच में हर कोई इन नव नंदियों के दर्शन करके पूजा-अर्चना करता है, उसे काशी विश्वनाथ या कैलास पति के दर्शन से प्राप्त होनेवाले सुफल प्राप्त होता है। इसलिए नंद्याल प्रदेश के लोग ही नहीं बल्कि नंद्याल के आस पास के पडोसी जिलों के लोग ही नहीं बल्कि आंध्र प्रदेश के पडोसी राज्यों से भी आकर लोग कार्तिक मास के दौरान इन नवनंदियों के दर्शन करके अतुलित पुण्य प्राप्त करते हैं।

नंद्याल शहर के इर्दगिर्द रहनेवाले इन नव नंदियों के दर्शन करने की एक क्रम पद्धति और संप्रदाय है। इस संप्रदाय के पालन से भक्तजन विशेष पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। कार्तिक मास में भक्त जन अपने काल कृत्य पूरा करके सर्व प्रथम नंद्याल शहर में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी के मंदिर जाते हैं। वहाँ मल्लिकार्जुन स्वामी के दर्शन करते हैं। यहाँ शिव भगवान मल्लिकार्जुन के रूप में जाने जाते हैं। उस के बाद नव नंदियों की यात्रा का संकल्प करते हैं। यात्रा का संकल्प वे मल्लिकार्जुन से नहीं बल्कि उसी मंदिर के प्राकार में स्थित साक्षी गणपति को साक्षी बना कर संकल्प करते है। भगवान गणपति की कान में अपनी यात्रा के बारे में तथा यात्रा करने की मनौती के बारे में बताकर संकल्प करते हैं। यहाँ के लोगों का यह भी विश्वास है कि नव नंदियों की यात्रा पूरा करने के बाद फिर इसी मंदिर में लौटकर साक्षी गणपति के पुनः एक बार दर्शन करके अपनी यात्रा की समाप्ति की घोषणा करते हैं। इस रूप में भक्त जन अपनी यात्रा के पुण्य फल को पूर्ण रूप से प्राप्त करते हैं।

यहाँ की परंपरा है कि साक्षी गणपति के सामने संकल्प करने के बाद भक्त जन क्रमशः नव नंदियों की यात्रा करते हैं। पुनः यहीं पर लौटकर अपनी यात्रा की समाप्ति करते हैं। यात्रा का क्रम इस रूप में है--1.प्रथम नंदि, 2.नाग नंदि, 3.सोम नंदि, 4.शिव नंदि, 5.कृष्ण नंदि या विष्णु नंदि, 6.महा नंदि, 7.विनायक नंदि, 8.गरुड़ नंदि, 9.सूर्य नंदि। इसी क्रम से भक्त जन सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त होने के पहले तक सारे मंदिरों के दर्शन करते हैं। इसके लिए उन्हें अवश्य वाहनों की जरूरत होती है। क्यों कि अठारह-बीस किलोमीटर पैदल चल कर नव नंदियों के दर्शन करना आज थोडा कठिन है। प्रत्येक मंदिर में भीड की संभावना भी होती है। इसलिए भक्त जन नंद्याल शहर से आटो रिक्शा, कार, बस आदि वाहनों की सुविधाओं का उपयोग करते हैं। कार्तिक मास की इस पवित्र मास में करनेवाली यह यात्रा शिव भगवान के लिए अत्यंत प्रिय यात्रा है। क्यों कि कार्तिक मास में शिव भगवान इन नवनंदियों के नंदि मंडल में ही वास करते हैं। शिव भगवान ऐसे भगवान है जो स्वयं भक्तों के पास ही आ जाते हैं। कलियुग के भक्त जन कार्तिक मास में इन नव नंदियों के तथा उन मंदिरों में बसे शिव भगवान के दर्शन करके अपने जीवन के सारे पापों को दूर कर सकते हैं। साथ ही शिव भगवान पर लौ लगाकर कैलास प्राप्ति कर सकते हैं। भोलेनाथ बहुत कम प्रयास से भक्तों की मनौतियों को दूर करनेवाले भगवान हैं। कार्तिक मास के इस नव नंदियों की पवित्र यात्रा से काशी विश्वनाथ के दर्शन-फल-सम फल प्राप्ति होती है, यह यहाँ के लोगों का विश्वास ही नहीं बल्कि शतप्रतिशत सच है। ऐसा अनुभव और अनुभूति नव नंदियों की यात्रा कार्तिक मास के किसी भी दिन को पूरा करनेवाले यात्रियों को होती है।

भक्त और भगवान के बीच के संबंध अनुपम और अद्वितीय हैं। भक्त नौ प्रकार से भगवान से संबंध जोडने का प्रयास करता है। आध्यात्मिक साधना के इस क्रम में श्रवणं, कीर्तनं आदि के क्रम में दास्य भक्ति सर्वाधिक उत्तम पद्धति मानी जाती है। वैष्णव संप्रदाय में गरुड़ और हनुमान सर्वोत्तम दास्य भक्तों के रूप में उभरते हैं। दोनों ने अपने स्वामी के लिए सर्वकालों और सर्वदा सेवा करने के तत्पर होते है। वैसे ही शैव भक्ति में नंदिकेश्वर सर्वथा शिव भगवान की सेवा में लगे रहते हैं। सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में जहाँ शिव मंदिर है वहाँ पर नंदिकेश्वर के दर्शन होते हैं। शिव भगवान के साथ नंदिकेश्वर के इस अटूट संबंध को कोई ठुकरा नहीं सकता है। कोई भक्त नंदिकेश्वर के स्थान को स्थानपन्न भी नहीं कर सकता है। शैवागम में इतना महत्व रखनेवाले नंदिकेश्वर का जन्मस्थान 'नंदि मंडल' या 'नंद्याल' है यह कहना अत्यंत गर्व की बात है। इस महान भक्त के नाम पर अंकित इस प्रदेश के दर्शन से, यहाँ पर प्रतिष्ठित नव नंदियों के दर्शन से तथा इन मंदिरों में बसे भोले नाथ शिव भगवान के दर्शन से शिवाराधना के भक्त पुलकित, तन्मय होकर अपने जन्म को सार्थक बनाते हैं।

समाप्त

तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का लक्षकुंकुमार्चन
16-11-2025

23-09-2025 से 02-10-2025 तक
तिरुमल में अत्यंत वैभव से
ब्रह्मोत्सव को संपन्न किया गया है।

उभयदेवेरियों सहित श्री उग्रश्रीनिवास मूर्ति
02-11-2025 को तिरुमल में 'कैशिक द्वादशी'।

श्री प्रपन्नामृतम्

(58वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

श्री कूरेशाचार्य का वैकुण्ठ निवास

महात्मा श्री कूरेशाचार्य जब अपने घर पर गये तो उन्होंने अपनी पत्नी को विचारमग्न देखकर इसका कारण जानना चाहा, जिसके प्रत्युत्तर में उस सती-साध्वी ने बतलाया कि- ''आपकी दासी मेरी आत्मा में अन्य कौन-सा विचार आ सकता है? जो विचार आपके हृदय में विद्यमान है वही मेरे अन्तःकरण में भी स्थित है। हे नाथ! आपका संकल्प अमोध है, इसमें किसी प्रकार का विघ्न नहीं आयेगा।'' यह कहकर पतिदेव के चरणारबिन्दों में प्रणाम करके वह साध्वी हाथ जोड़कर उनके ही सन्मुख खड़ी हो गयी। इसके पश्चात् श्री कूरेशाचार्य ने ''पराशर भट्ट और श्रीरामपिरान'' नामक अपने दोनों पुत्रों को भी अपने समीप बुलाया और कहा कि- ''प्रिय पुत्रों! श्रीरंगनाथ भगवान और श्री गोदाम्बाजी के विद्यमान रहते हम लोगों के लिये किसी वस्तु का अभाव नहीं है। उनकी कृपा से सभी मनोकामनायें पूर्ण हो रही हैं। तुम्हें उत्पन्न एवं पालन-पोषण करने वाले एक मात्र वे ही श्री गोदारंगेश हैं। अतः अब तुम दोनों उनकी शरण में रहकर संसार में अपना जीवन व्यतीत करो।''

''हे पुत्रों! तुम दोनों जगद्गुरु यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरणारविन्दों को ही अपना रक्षक मानकर अपनी माता के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलते रहो। अपने जीवन में तन-मन-धन - इन तीनों के द्वारा कभी भी किसी श्रीवैष्णव या किसी महापुरुष का अपचार न करते हुए श्रीवैष्णवों के अनुगामी बनकर उनकी सेवा करते हुए जीवन व्यतीत करो।'' ऐसा कहकर उन्होंने अपने चरण कमलों में पड़े हुये प्रेमपरायण उन दोनों पुत्रों को उठाकर गाढ़ आलिंगन कर प्रेमाश्रुओं से उनके मस्तक का सिंचन कर मंगलाशासन किया। पिता के वात्सल्यपूर्ण व्यवहार से दोनों पुत्र रोने लग गये। रोते हुए पुत्रों को सान्त्वना देते हुए उन्होंने कहा कि- ''तुम दोनों आज मेरे शरीर सम्बन्धी वियोगजन्य दुःख पर विचार करके रो रहे हो, यह उचित नहीं है। ऐसा करने से यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरण कमलों से दूर चले जाओगे उनके दोनों चरण कमल जी समस्त प्राणियों के आत्मकल्याण के प्रधान साधन माने गये हैं। अतः हमारे शरीर का नाता एवं सम्बन्ध के मोह को त्यागकर यतिराज के चरणों का स्मरण करो।'' समझाकर श्री कूरेशाचार्यजी अपना शरीर त्याग करने के लिये तैयार हो गये। आपने अपने आचार्य के नाम से प्रसिद्ध-जो

यतिराज श्री रामानुजाचार्य के शिष्य थे, उस पौत्र की गोद में मस्तक एवं अपनी साध्वी धर्मपत्नी के अंक में चरण रखकर, निश्चल भाव से अपने दोनों पुत्रों के समीप में ही लोट गये। इस प्रकार महात्मा श्री कूरेशाचार्य ने बिना किसी प्रयास के अकस्मात् यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरणकमलों का ध्यान करते हुये अपने पार्थिव शरीर का त्याग कर दिया।

श्री कूरेशाचार्य के परमपद का समाचार सुनते ही शीघ्रता से यतिराज श्री रामानुजाचार्य उनके घर पर आये एवं पितृवियोग में रोते हुए उनके दोनों पुत्रों को आश्वासन देते हुए कहा कि- ''आज मेरे पिता का देहान्त हो गया।'' इस प्रकार का सांसारिक शोक मत करो। कूरेश परम भागवत थे। अतः ''हे वत्स अब उनके विधिवत अन्त्येष्टि संस्कार की तैयारी में संलग्न हो जाओ। श्री यतिराज के द्वारा यह सान्त्वना पाकर श्री कूरेशाचार्य के ज्येष्ठ पुत्र श्री पराशर भट्ट उनके आदेशानुसार ब्रह्ममेध विधान के जानने वाले श्रीरंगनाथ भगवान के अर्चकों के साथ अपने पिता के अन्तिम संस्कार की तैयारी में लग गए। सर्वप्रथम मृत शरीर को गायत्री मन्त्र तथा पुरुषसूक्त एवं नारायणानुवाक् के मन्त्रोच्चार के साथ स्नान कराया गया। इसके बाद शास्त्रीय विधिपूर्वक समस्त पैतृक कर्म-काण्डादि यतिराज श्री रामानुजाचार्य के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग से मृत शरीर को पुनः स्नान कराकर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलकों से विभूषित कर विधिपूर्वक श्रीचूर्ण का परिपालन किया।'' भगवान श्री केशव के लिये समर्पित शरणागत शरीर को ब्राह्मण-ब्रह्ममेध विधि के बिना नहीं जलावें यह ब्रह्मचिन्तन परायण मुनियों ने ब्रह्ममेध का विधान बताया है। हारीत-स्मृति में ब्रह्ममेध की जो विधि कही गयी है, उसके अनुसार महाभागवतों का ब्रह्ममेध संस्कार होना चाहिए। इस शास्त्रीय कथन के अनुसार ही पराशर भट्टर ने अपने पिता का चरण कैंकर्य ब्रह्ममेध संस्कार यतिराज श्री रामानुजाचार्य एवं अन्य सभी श्रीरंगम् निवासी श्रीवैष्णव महात्माओं के सामने सम्पन्न किया। दसवें दिन अपने अनुज एवं अन्य बन्धु-बान्धवों के साथ पिता के सभी शास्त्रोक्त कर्मकाण्ड सम्पन्न करके ग्यारहवें एवं बारहवें दिन के कृत्य भी विधिपूर्वक सम्पन्न कर ब्रह्ममेध के विधान से अन्त्येष्टि सम्बन्धी सभी कार्य पूर्ण करवा दिये।

पिता के उपरोक्त प्रकार से सभी चरम कैंकर्य सम्पन्न करके एक दिन श्री पराशर भट्टार्य ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य के साथ सभी श्रीवैष्णव महात्माओं को अपने घर पर बुलाया और उनके आगमन पर प्रसन्न होकर उन्होंने निवेदन किया कि- ''श्रीवैष्णवों के चरणोदक से श्रेष्ठ अन्य किसी भी तीर्थ का जल नहीं है। श्रीवैष्णव की चरण धूलि गंगा को भी पवित्र बनाती है। उनका श्री पादतीर्थ विचित्र वैभव से युक्त एवं परम कल्याणकारी है।'' यह कहकर उन्होंने भक्तिपूर्वक श्रीवैष्णव महात्माओं के चरणारविन्दों को पखारकर श्री पादतीर्थ बनाया। शास्त्रों में कहा है कि- ''उत्तम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुभकर्मों के आरम्भ में श्रेष्ठ ब्राह्मणों के द्वारा समस्त सम्पत्ति तथा कल्याण को देने वाली सहस्रगीति तथा चार हजार दिव्य प्रबन्धों का पाठ करावे। विशेषकर श्राद्धादि अशुभ कर्मों के अन्त में समस्त अशौचादि पापों को मिटाने वाली द्राविड़ वेदान्त संहिता का पाठ ब्राह्मणों के द्वारा अवश्य कराना चाहिये। वृद्धि (मांगलिक कार्य) के प्रारम्भ में तथा क्षय (अमांगलिक कार्य) के अन्त में ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार श्रेष्ठ श्रीवैष्णव ब्राह्मणों के द्वारा सहस्रगीति का पाठ अवश्मेव कराना चाहिये।''

उपरोक्त शास्त्र के वचनों के अनुसार उन्होंने महात्मा श्री कूरेशाचार्यजी के वैकुण्ठोत्सव के रूप में सहस्रगीत और द्राविड वेद आदि का पाठ विद्वान श्रीवैष्णवों के द्वारा सम्पन्न करवा करके अपने अनुज सहित उनको पुष्पांजलि समर्पित की।

''महा-भागवतों की पूजा करने से भगवान श्रीमन्नारायण जितने सन्तुष्ट होते हैं उतने सन्तुष्ट विधिपूर्वक की गयी अपनी पूजा से भी नहीं होते।'' इस वाक्य के अनुसार

उन्होंने विष्णु भक्ति परायण प्रपन्न श्रीवैष्णवों की वस्त्र, भूषण, अन्न आदि के द्वारा पूजा की और उनको दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। पौष मास का हस्त नक्षत्र श्री कूरेशाचार्य का अवतार नक्षत्र प्रसिद्ध है। उनके वैकुण्ठोत्सव में पधारे हुए विद्वानों ने उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिये ''श्रीवत्सचिह्न-मिश्रेभ्य'' इस ''तनियन्'' श्लोक की रचना की। जिसका तात्पर्य यह है कि- ''उनके द्वारा रचित उक्तियाँ वेदत्रयी के कण्ठ में मंगलसूत्र के समान हैं। जो श्रुतियाँ मानों विधवा थीं, वे आज उनकी सूक्तियों से सौभाग्यवती हो गयी हैं। ऐसे ही श्रुतियों को सौभाग्य प्रदान करने वाले महामहिम श्रीवत्सचिह्न मिश्र उपनाम वाले श्री कूरेशाचार्य को हम सभी साष्टांग प्रणाम करते हैं।'' तदनन्तर यतिराज पराशर भट्टार्य को साथ लेकर भगवान श्रीरंगनाथ की सन्निधि में आये। पीताम्बर धारी भक्तप्रिय भगवान श्रीरंगनाथ ने विनीत भट्टार्य को पुत्रवत् स्वीकार कर अर्चक के मुख से कहलवाया कि- ''वत्स! आज से तुम, तुम्हारे पिता के परमपद प्राप्त होने पर हमारे लिये पुत्रवत् हो, सभी चिन्ताओं को छोड़कर यहाँ सुखपूर्वक निवास करो।'' भगवान के इन वचनों को सुनकर यतिराज ने उनसे कहा कि- ''आप इस पुत्र का सर्वविधि कल्याण करें। मैं इस बालक को सभी शास्त्र पारंगत करूँगा।'' भगवान ने उन्हें श्री शठकोप और माला प्रदान करवाई और फिर उनको उनके निवास स्थान पर प्रेम पूर्वक विदा किया। वे दोनों मठ में आकर सर्वशास्त्र विशारद श्री गोविन्दाचार्य के हाथ में यतिराज ने उस बालक को विद्याध्ययन के लिये सौंप दिया।

श्री कूरेशाचार्य का जीवन चरित्र मानवों के लिये सम्पत्ति प्रदाता, ज्ञानप्रद, सकल पापहारी, सांसारिक दुःखमोचन तथा मोक्षदायी है। जो इसे भक्तिभाव से सुनते हैं तथा पढ़ते हैं, वे निश्चय ही भगवान विष्णु के निवास स्थान वैकुण्ठधाम को प्राप्त करते हैं।

।। श्री प्रपन्नामृत का 58वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको अवश्य ध्यान रखें।

- तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''गोविंदा'' का उच्चारण करें।
- तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम्, आकाशगंगा पवित्र तीर्थों तथा अंजनाद्रि आंजनेय (हनुमान) मंदिर को दर्शन करें।
- तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।

काशी की विशिष्टता

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

विश्वेश्वरं महा देवं, अंबिकार्थ शरीरिणम्।
वाराणसी पतिं वंदे वांछितार्थ फलप्रदम्।।

जगत पर विराजित (84) चौरासी लाख जीव-कोटि में मानव जन्म का प्राप्त होना दुर्लभ है। अनेकों सहस्त्र जन्मों का पुण्य फल ही मानव जन्म है। ऐश्वर्य, दरिद्र, आरोग्य, अनारोग्य इत्यादि खेद-मोद पूर्वकर्मों का फल ही है। प्रत्येक व्यक्ति इह-पर लोकों में सुख-शांति पाने के लिए, आगामी जन्म उत्तम बनने के लिए पुण्य-चिंतन व सत्कर्मों का आचरण करना चाहिए। ऐसा हमारे पुराण बता रहे हैं। उन सत्कर्मों में से एक तीर्थाटन है। तीर्थाटन करके ईश्वर की सेवा करके तरना होगा।

पुण्यभूमि भारत वर्ष में प्रशस्ति प्राप्त पुण्यक्षेत्र तीन हैं। वे हैं; (1) काशी (वाराणसी), (2) गया और (3) प्रयाग। काशी-नाम-स्मरण ही मोक्षदायक है। काशी-वास ही कैलासवास है। शेषक्षेत्र परंपरागत मोक्षदायक हैं। ''वाराणसी'' ही काशी है; यह ब्रह्म की सृष्टि नहीं है। परमेश्वर से स्वयं निर्मित है। तीनों लोकों में यह, दिव्य पुण्यक्षेत्र के रूप में विराजित हो रही है। यहाँ, गंगा तरंगिणी ने उत्तरवाहिनि के रूप में प्रशस्ति पायी। यह क्षेत्र - क्षेत्र, तीर्थ, दैव; इन तीनों रूपों में प्रशस्ति प्राप्त करने से त्रिलोकों का आराध्य बना। तीन करोड देवता, देवाधिदेव का सेवन करते यहाँ निवास कर रहे हैं। ''वाराणसी'' केवल शैवक्षेत्र है; ऐसा अज्ञानियों की भावना है। काशी विश्वनाथ के सान्निध्य के कारण शैवों को (अद्वैतों को); श्री बिंदुमाधव स्वामी के सान्निध्य के कारण श्रीवैष्णवों को; शक्तिपीठ (विशालाक्षीपीठ), अन्नपूर्णा, दुर्गा की मूर्तियाँ यहाँ विलसित होने से शाक्तेयों को; साक्षी/चिंतामणि, ढुंढिगणपतियों के साक्षात्कार होने से गाणापत्यों को तथा विविध देवता मूर्तियों के दर्शन करने का प्रदेश होने से विविध धर्मावलंबियों के लिए महा क्षेत्र बनकर विराजित हो रही है। भक्तों की पेन्निधि (निधि, खजाना) कालभैरव, इस क्षेत्र का पालन करते दर्शन दे रहा है। काशी की दक्षिण दिशा में लोलार्क स्थान पर ''असी'' नदी; उत्तर की दिशा में केशव स्थान पर 'वरणा' नदी को देवताओं ने निर्मित किया। ''वरणा-असी'' संगम स्थल ही 'वाराणसी'' या ''काशी'' है। यहाँ किये गये, स्नान-जप-होम-श्राद्ध(आब्दिक)-दान-मरण मुक्तिप्रद हैं। यहाँ किया हुआ कोई भी सत्कार्य; करोड सत्कर्मों का फल देता है। एक बार भगवन्नाम-स्मरण करने पर करोड़ बार स्मरण करने का फल मिलता है। अक्षि (नेत्र), श्रोत (कान), चरण, कर (हाथ), मन; ये सब; पूर्वजन्म सुकृति के कारण दर्शन करके, सुनकर, पूजा-अर्चना करके पुनीत बन रहे हैं। काशी में प्रतिदिन; पुण्यदिन ही है। यहाँ की विभूति का धारण करना ही भूषण (आभरण) है। कौपीन धारण ही रेशम-वस्त्र

धारण है। माँ पार्वती से, महेश्वर के कहे अनुसार काशी में करोड़ों शिवलिंग प्रतिष्ठित किये हुए हैं। कहा जाता है कि ये शिवलिंग ऐसे सटे हुए हैं कि उनके एक दूसरे के बीच तिल का दाना (बीज) रखने का स्थान भी नहीं है। शिव ही हर है; हर ही काशी है।

काशी में विराजित मंदिरों का वीक्षण करना चाहे तो अनेकों वर्ष लगते हैं। सांसारिक जीवन में फँसे लोग तो यहाँ आकर रिक्शा, आटों वालों के सूचनानुसार कुछ प्रमुख प्रदेशों का दर्शन करके तर रहे हैं। किन्तु देखनेलायक सारे पवित्र क्षेत्र; घाट; नहीं देख पा रहे हैं। उनमें से कुछ ये हैं; साक्षिगणपति, ढुंढिगणपति, अन्नपूर्णा मंदिर, विशालाक्षी मंदिर, विश्वेश्वर मंदिर, केदारेश्वर, माँ चतुःषष्ठि, कालभैरव, चिंतामणि गणपति, मानस संकट विमोचन, व्यास-काशी, गव्वलम्मा मंदिर, दुर्गामाता मंदिर, मानस मंदिर इत्यादि। इन्हें देख यात्री तर जाते हैं। इनके अलावा श्री लिंभाडेश्वरालय (सती कथा), वंगनारु-लिंगनारु (जंगंबाडि मठ), श्वेतांबरेश्वर (राजकथा) आदि कुछ और शिवलीलाओं से संबंधित पुण्य प्रदेश हैं। काशी में चाहे किसी भी परमाणु को क्यों न छुएँ तो हर एक का महत्व दृष्टि गोचर होता है। सारी काशी शिवमय है।

तिलभांडेश्वर : 1600 वर्ष पूर्व काशी में एक तेली था। उसकी अर्धांगी (पत्नी) शिव भक्तिन थी। निर्मल चित्त से परमेश्वर का ध्यान करके, साक्षात्कार पाकर, उनसे बातचीत करने का सामर्थ्य रखनेवाली पुण्यात्मा थी। किन्तु उस पर उसके पति को संदेह व असूया थी।

एक बार व्यापार के निमित्त नगर जाकर लौटने में कुछ देर लगी। अपराह्ण होने से वह भक्तिन परमेश्वर को नैवेद्य चढाकर उस देवदेव से संभाषण कर रही थी। इतने में पति आकर गृहांतर (घर के अंदर) में पुरुष संभाषण सुनकर क्रोधित हो दरवाजा खटखटाया। उसकी चित्तवृत्ति (हृदय) जाननेवाली भक्तिन, पति का आगमन जानकर परमेश्वर को तिलों की टोकरी के नीचे छुपाकर दरवाजा खोल दिया। शंकित पति ने सारा घर छान मारकर टोकरी उठाकर देखा। वहाँ, विश्वेश्वर, लिंगरूपधारी हो विलसित हुए। तब से वह प्रति वर्ष तिल-बीज परिमाण में बढता जा रहा है। आज भी ऐसा चल रहा है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। प्रत्यक्ष प्रमाण है।

वंगनारु-लिंगनारु : काशी क्षेत्र से बारह योजन दूर पर एक ''धर्मक्षेत्र'' था। उसका शासक सुधर्म था। उसकी माता बड़ी शिवभक्तिन थी। सांसारिक-बन्धन छोड़कर ईश्वर की सेवा-आराधना करती काशी में ही देहत्यागने के संकल्प को लेकर विश्वेश्वर-मंदिर से डेढ़ सौ गज की दूरी पर कुटीर बनाकर साधु-सज्जनों को संतृप्त करती उसने साध्वी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की।

किसी समय भूरिद्युम्न महाराजा क्रोधित हो चार ब्राह्मणों और एक सती की हत्या करके महा पातक बन गया। उसे ब्रह्म-हत्या पाप लग गया। पाप-परिहारार्थ अनेकों उपाय किये। किन्तु पाप-विमुक्त नहीं बना। एक दिन महा शिव भक्त शालंकायनपुत्र ने उसे पाप-निवृत्ति के लिए विश्वेश्वर के दर्शन करने की सलाह दी। उसने काशी जाकर गंगा में डुबकी लगा कर विश्वेश्वर के दर्शन किये। ब्रह्महत्या पाप से बच गया।

राजा ने मुनि से पूछा - पाप-निवृत्ति का निदर्शन क्या है? महर्षि ने बता दिया - काशी जाते वक्त तुम पाँच काले कुरते पहन कर काशी का दर्शन करो। उसके बाद वे कुरते विश्वेश्वर की महिमा से सफेद बनना तुम देख सकते हो। वे वैसे ही बने। उसके पाप दग्ध होकर धवलांबर बने। श्री विश्वेश्वर ने भी श्वेतांबर धारण करके उसे दर्शन दिये।

भगवान धन्वंतरि का परिचय

- श्री अवधेश कुमार शर्मा

भारतीय संस्कृति में आरोग्य और आयुर्वेद का आदर सर्वोपरि माना गया है। कहा भी गया है- ''आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्।'' अर्थात् स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा सौभाग्य है और सभी कार्यों की सफलता का आधार भी वही है। आयुर्वेद के अधिष्ठाता भगवान धन्वंतरि को इसी कारण वैद्यराज और आयुर्वेदाचार्य कहा जाता है। दीपावली के प्रथम दिन धनतेरस को उनका प्राकट्य हुआ, इसी दिन उनकी जयंती मनाई जाती है।

भगवान धन्वंतरि का अवतरण : पुराणों में वर्णन

श्रीमद्भागवत महापुराण (अष्टम स्कंध, अध्याय 8) में समुद्र मंथन की विस्तृत कथा वर्णित है। देवताओं और असुरों ने अमृत की प्राप्ति के लिए क्षीरसागर का मंथन किया। उसमें अनेक रत्न प्रकट हुए - लक्ष्मी, कामधेनु, ऐरावत, पारिजात वृक्ष, उच्चैःश्रव अश्व आदि। इसी क्रम में भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए, जिनके चार हाथ थे - एक हाथ में अमृतकलश, दूसरे हाथ में औषधि तथा शेष हाथों में शंख और चक्र धारण किए हुए।

''ततः समुद्धृत्य सुधां सुदर्शनं च
ददर्श धीमान् हयमेव चोच्चैःश्रवसम्।
प्रादुरभूत पुरुषः श्यामलोऽत्यद्भुतदर्शनः
अमृतकलशहस्तश्च धन्वंतरिरिति स्मृतः।।''

श्लोक (भागवत 8.8.31)

अर्थ - तत्पश्चात समुद्र से अमृत-कलश और सुदर्शन चक्र के साथ एक अत्यन्त सुंदर, श्याम वर्ण का पुरुष प्रकट हुआ, जो अमृत का कलश लिए हुए था। वही भगवान धन्वंतरि कहलाए।

आयुर्वेद के आदिगुरु

चरक संहिता (सूत्रस्थान 1.4) में वर्णन है कि आयुर्वेद का प्रथम उपदेश भगवान ब्रह्म से प्रजापति, प्रजापति से अश्विनीकुमारों और अश्विनीकुमारों से भगवान धन्वंतरि को प्राप्त हुआ। सुश्रुत संहिता (सूत्रस्थान 1.6) के अनुसार आचार्य सुश्रुत स्वयं भगवान धन्वंतरि के शिष्य रहे। इसी कारण इन्हें ''वैद्यराज'' ''आरोग्यनिधि'' और ''आयुर्वेदाचार्य'' की उपाधि प्राप्त है।

आयुर्वेद की परंपरा-संरचना में धन्वंतरि की भूमिका

(क) ज्ञान-संप्रदाय का प्रवर्तन

दिव्य से लौकिक संक्रमण : दिव्य ज्ञान को व्यवहृत (प्रैक्टिकल) चिकित्सा-शिक्षा में रूपांतरित करना - यही धन्वंतरि की प्रथम व बड़ी देन मानी जाती है।

गुरु-शिष्य परंपरा : सुश्रुत संहिता (सूत्रस्थान, आद्य अध्याय) में वाराणसी के राजा दिवोदास धन्वंतरि द्वारा शल्य-विद्या का उपदेश शिष्यों (सुश्रुत आदि) को

देने का प्रसंग आता है-यही काशी शल्य-परंपरा का आधार बना।

(ख) शल्य-चिकित्सा का संस्थानीकरण

शल्य-तंत्र की परंपरा : धन्वंतरि को शल्य-तंत्र का आदिगुरु माना गया; उनके शिष्य आचार्य सुश्रुत ने शल्य-विज्ञान को प्रतिबद्ध किया-यंत्र-शस्त्र, बन्धन, शोधन-रोपण, भेदन-छेदन, नाड़ी-व्रण, भगन्दर, नासिकाशोथ, कर्ण-नासा-औष्ठ छेदन/पुनर्गठन इत्यादि का सुविस्तार विवरण सुश्रुत संहिता में है।

शव-विच्छेदन : चिकित्साशिक्षा में शव-विच्छेदन, अभ्यास-वस्तुएँ (कुम्भफलों, पशु-मूत्राशय आदि पर अभ्यास) जैसी पद्धतियाँ-धन्वंतरि-शिष्य परंपरा की विशिष्ट पहचान बनीं।

नेत्र-शल्य और दन्त-शल्य की परंपरा : सुश्रुत द्वारा वर्णित मोतियाबिंद निकालने की तकनीक, दन्त-उच्छेदन, नाक-पुनर्निर्माण आदि-इस शल्यधारा की प्रत्यक्ष उपलब्धियाँ हैं; इसकी मूल गुरु-परंपरा धन्वंतरि तक जाती है।

(ग) औषध-विज्ञान की धूरी

द्रव्य-गुण, रस-वीर्य-विपाक : औषधि को केवल ''वनस्पति-ज्ञान'' न मानकर उसके रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव आदि से जोड़कर चिकित्सोपयोगी बनाना-धन्वंतरिक परंपरा की केंद्रीय विशेषता।

निघण्टु-परंपरा : धन्वंतरि विघण्टु नाम से प्रचलित औषध-कोश (मध्यकालीन संकलन) परंपरा में उनके नाम से सम्बद्ध है; इससे द्रव्य-मानकीकरण और पदावली का चलन मज़बूत हुआ (यद्यपि उपलब्ध निघण्टुओं का संकलनकाल बाद का है, परंपर-निष्ठ श्रेय धन्वंतरि-परंपरा को ही दिया जाता है)।

(घ) स्वास्थ्य-संरक्षण की अवधारणा को प्रधानता

चरक का सूत्र - ''स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं, आतुरस्य विकारप्रशमनम्'' - धन्वंतरिक धारा का ही मूल दर्शन है: दिनचर्या/ऋतुचर्या : ऋतु-अनुकूल आहार-विहार, निद्रा, व्यायाम, स्नान, अभ्यंग, धूम-पान, नस्य आदि। रसायन-वाजीकरण : दीर्घायु, ओज-वृद्धि, प्रतिरोधकता (इम्युनिटी) एवं प्रजनन-स्वास्थ्य के लिए रसायन-वाजीकरण की अनुशासनबद्ध धाराएँ। आहार-नियम (पथ्य-अपथ्य) : रोग-निवारण से पहले रोग-न-हो-यह निवारक स्वास्थ्य का मूलतत्त्व बनने लगा।

(ङ) चिकित्सा-नीति, आचार और शिक्षा-पद्धति

वैद्य-आचार : सत्यनिष्ठा, दया, गोपनीयता, स्वच्छाचार, गुरु-सेवा, रोगी-हित-ये आदर्श वैद्य-धर्म धन्वंतरि-शिष्य परंपरा की मूल आचार-संहिता बने (विस्तारः सुश्रुत संहिता, प्रमुख अध्याय)।

शिक्षण-प्रणाली : प्रवेश-मानदण्ड, आवास-शिक्षण, ग्रन्थ-अभ्यास, व्यावहारिक अभ्यास, रोगी-सेवा, गुरु-मुखोपदेश ढंग की प्राचीन रूपरेखा अंकित मिलती है।

व्यावहारिक योगदान-उदाहरण के साथ

दृष्टांत : काशी में दिवोदास धन्वंतरि के आश्रम/विद्यालय में शिष्यों को पहले यंत्र-शस्त्र की पहचान, फिर अभ्यास-वस्तुओं पर हाथ साधना, तत्पश्चात रोग-विशेष की शल्य-क्रियाएँ करना सिखाया जाता था - जैसे नाड़ी-व्रण को खोजकर नालबद्ध करना, भगन्दर की शल्य, नाक/ओष्ठ का पुनर्गठन आदि। यह चरणबद्ध प्रशिक्षण, नैतिक-सम्मति और रोगी-हित की प्रतिज्ञा के साथ होता-यही बाद में भारतीय शल्य-शिक्षा की मानक परंपरा बना (सुश्रुत संहिता, सूत्र/चिकित्सा/उत्तर तन्त्र के उपविभागों में विषयानुसार)।

आयुर्वेद की आठ शाखाओं (अष्टांग) में धन्वंतरि-धारा का प्रभाव

1. कायचिकित्सा (आंतरिक चिकित्सा) - निदान पंचलक्षणी, दोष-धातु-मल, अन्न-पान-विहार, संयम।

2. शल्यतंत्रचिकित्सा - धन्वंतरि - सुश्रुत परंपरा की सर्वोच्च देन (यंत्र-शस्त्र, पट्टबंध, रोपण-शोधन, आघात-चिकित्सा)।

3. शालाक्लयतंत्र नेत्र-कर्ण-नासिका-कंठ रोगों की विशिष्ट शल्य/औषध पद्धतियाँ।

4. कौमारभृत्य - बाल-रोग, स्तन्योपयोग, संस्कार-क्रम।

5. भूतविद्या - मानसिक/आदिभौतिक-आधिदैविक विकारों का समग्र दृष्टिकोण।

6. अगद तंत्र - विषोपचार, जहर/विषमिश्रित विकारों का तत्काल प्रबंधन।

7. रसायन तंत्र - पुनरुत्थान ओज-वृद्धि, प्रतिरोधकता-विकास।

8. वाजीकरण : जनन-स्वास्थ्य, शुक्र-अर्थव-वर्धन, गृहस्थाश्रम की स्वास्थ्य-दृष्टि।

क्र.सं.	शाखा	उद्देश्य	प्रमुख रोग क्षेत्र
1.	कायचिकित्सा	आंतरिक रोग निवारण	ज्वर, वात-कफ-पित्त, हृदय, जिगर, पाचन
2.	शल्यतंत्र	शल्य/सर्जरी	घाव, भगन्दर, हड्डी/अंग विकार
3.	शालाक्यतंत्र	नेत्र, कान, मुख, गला	आंख, कान, नाक, मुख रोग
4.	कौमारभृत्य	बाल चिकित्सा	शिशु रोग, स्तन्यपान
5.	भूतविद्या	मानसिक रोग	भय, पागलपन, चिंता
6.	अगदतंत्र	जहर/विष	सांप, विष, कीटजन्य रोग
7.	रसायनतंत्र	दीर्घायु, प्रतिरोधकता	पुनरुत्थान, ओज, मानसिक शक्ति
8.	वाजीकरणतंत्र	प्रजनन स्वास्थ्य	शुक्रधातु, वीर्य-वृद्धि, प्रजनन क्षमता

इन सभी में औषधि-द्रव्य के गुण-कर्म और निवारक स्वास्थ्य का जो बल दिखता है, उसका आदर्श-रूप धन्वंतरि-परंपरा ही है।

धन्वंतरि जयंती का महत्व : धार्मिक, सामाजिक, चिकित्सा और आधुनिक दृष्टि से -

1. धार्मिक महत्व

समुद्रमंथन प्रसंग : श्रीमद्भागवत महापुराण (स्कंध 8, अध्याय 8) में वर्णन है कि जब देव-दानवों ने समुद्र मंथन किया, तो भगवान विष्णु का अंशावतार धन्वंतरि प्रकट हुए। उनके हाथ में अमृत-कलश था। इस प्रकार उन्हें ''अमृत-प्रदाता'' कहा गया।

''प्रादुरभूत् पुरुषः श्यामलोऽत्यद्भुतदर्शनः।
अमृतकलशहस्तश्च धन्वंतरिरिति स्मृतः।।''

आरोग्य देवता : धर्मशास्त्रों में भगवान धन्वंतरि को आरोग्य के देवता और आयुर्वेदाचार्य माना गया है।

पूजन-विधि : इस दिन लोग भगवान धन्वंतरि की प्रतिमा या चित्र पर दीप, नैवेद्य, पुष्प चढ़ाते हैं और आरोग्य, दीर्घायु तथा रोग-निवारण की प्रार्थना करते हैं।

दार्शनिक अर्थ : ''धन्वंतरि'' नाम ही बताता है - ''धनु'' = रोग, ''अंतर'' = नाशक; अर्थात् जो रोगों का नाश करते है। इस दिन किया गया जप, हवन और ''**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय धन्वंतरये अमृतकलश हस्ताय सर्वभय विनाशाय त्रैलोक्यनाथाय श्रीमहाविष्णवे नमः**'' मंत्र का जप विशेष फलदायी माना जाता है।

धार्मिक दृष्टि से यह दिन केवल पूजा का नहीं, बल्कि आयुष्य और स्वास्थ्य का उत्सव है।

2. सामाजिक महत्व

धनतेरस और लोकमानस : धन्वंतरि जयंती को ही ''धनतेरस'' कहा जाता है। आम जनमानस में यह दिन लक्ष्मी-पूजन और खरीदारी के लिए प्रसिद्ध है। **खरीदारी की परंपरा :** स्वर्ण, रजत, बर्तन, आभूषण, गृह-उपयोगी सामग्री खरीदने का रिवाज़ है। यह परंपरा प्रतीकात्मक है-कि सच्चा धन स्वास्थ्य है। **समूह-उत्सव का अवसर :** भारतीय समाज में यह दिन दीपावली-पर्व का प्रारंभिक दिवस है। लोग अपने परिवार और समुदाय के साथ हर्षोल्लासपूर्वक इसे मनाते हैं।

सामूहिक संदेश : ''धन'' शब्द का वास्तविक निहितार्थ स्वास्थ्य और आरोग्य है। ''आरोग्यं परमं भाग्यं, स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्'' - यह श्लोक हमें याद दिलाता है कि स्वास्थ्य ही जीवन का वास्तविक आधार है। सामाजिक स्तर पर यह दिन संपत्ति से अधिक स्वास्थ्य की प्रतिष्ठा करने का पर्व है।

3. चिकित्सा महत्व

आयुर्वेद के आदिगुरु का स्मरण : चरक संहिता (सूत्रस्थान 1.25) में कहा गया है-

''स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च''

यही आयुर्वेद का मुख्य लक्ष्य है। इस सूत्र को धन्वंतरि के उपदेश का प्रत्यक्ष आधार माना गया है। **वैद्य-समाज की परंपरा :** इस दिन आयुर्वेदाचार्य और वैद्य अपने आदिगुरु का स्मरण करते हैं। वे चिकित्सा-नैतिकता, सेवा-भाव और अनुसंधान का नूतन संकल्प लेते हैं।

शिक्षण-संस्कार : आयुर्वेदिक संस्थानों, चिकित्सालयों और विश्वविद्यालयों में धन्वंतरि-जयंती पर विशेष कार्यक्रम, संगोष्ठी और वैद्यराज-पूजन होता है।

चिकित्सा-आचार : सुश्रुत संहिता में वर्णित है कि वैद्य को सत्य, संयम, दया और रोगी-हितकारी होना चाहिए। यह संदेश आज भी इसी दिन पुनःस्मरण कराया जाता है।

4. आधुनिक महत्व

जीवनशैली जन्य रोग की चुनौती : वर्तमान समय में मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, हृदयरोग, अवसाद जैसी बीमारियाँ जीवनशैली से जुड़ी हुई हैं। आधुनिक चिकित्सा भी मान रही है कि रोग का इलाज करने से पहले उसकी रोकथाम करना श्रेष्ठ है।

निष्कर्ष

धन्वंतरि जयंती केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है, बल्कि भारतीय आयुर्वेद और स्वास्थ्य-संस्कृति का समग्र उत्सव है। भगवान धन्वंतरि को आयुर्वेदाचार्य और आरोग्य के देवता के रूप में माना गया है। उनके प्रकट होने की कथा, समुद्रमंथन से जुड़ी हुई है, जो यह संदेश देता है कि सच्चा अमृत और धन स्वास्थ्य है। भारतीय आयुर्वेद में उनका योगदान अद्वितीय है। उन्होंने शल्य-तंत्र, औषध-विज्ञान, स्वास्थ्य संरक्षण, जीवनशैली और नैतिक चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में स्थायी आधार स्थापित किया। उनके उपदेशों और परंपरा के आधार पर विकसित हुई अष्टांग आयुर्वेद-कायचिकित्सा, शल्यतंत्र, शालाक्यतंत्र, कौमारभृत्य, भूतविद्या, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरणतंत्र-आज भी समग्र स्वास्थ्य प्रणाली का आधार हैं।

धन्वंतरि जयंती का धार्मिक महत्व हमें आरोग्य और दीर्घायु की कामना सिखाता है। सामाजिक दृष्टि से यह हमें याद दिलाता है कि वास्तविक धन स्वास्थ्य है। चिकित्सा दृष्टि से यह वैद्य और चिकित्सक को उनके आदिगुरु की स्मृति और सेवा-संकल्प की प्रेरणा देता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह हमें जीवनशैली जन्य रोगों और तनाव, मोटापा, मधुमेह, हृदयरोग जैसी बीमारियों से बचाव के लिए प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद की ओर लौटने की प्रेरणा देता है।

अतः, धन्वंतरि जयंती केवल पूजा का दिन नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, जीवनशैली, नैतिक चिकित्सा और आयुर्वेद के सिद्धांतों का उत्सव है। इस दिन का संदेश स्पष्ट है - ''रोग का इलाज करने से पहले उसकी रोकथाम करना उत्तम है और स्वास्थ्य ही वास्तविक धन है।''

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल में निषेधित कार्य।

- तिरुमल में धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि निषेधित हैं।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- भिखमंगों का प्रोत्साहन न करें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- अन्य मतों का प्रचार न करें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल, राजकीय पार्टीयों का झंडा व चिह्न, अन्य मतों का चिह्न, प्रमुख व्यक्तियों का छायाचित्र आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।
- पशु, पक्षी का वध निषेधित है।
- तिरुमल में जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।
- प्लास्टिक ब्याग, कवर्स, बोतिल और तत्संबंधित चीजों को संपूर्ण रूप से निषेधित है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

वळरुम् पिणिकोण्ड बल्विनैयाल्, मिक्क नल्विनैयिन्
किळरुम् तुणिवु किडैत्तरियादु, मुडैत्तलैयून्
तळरु मळवुम् धरित्तुम् विळुन्दुम् तनितिरिवेर्क्कु
उळ रेम्मिरैवर्, इरामानुजन् तन्नै उट्रवरे ॥९६॥

निरवधिकदु:खनिदान भूतकर्मग्रन्थिसंचयवशात् परमधर्मभूतशरणागतौ दृढविश्वासानुदयेन पूतिगन्धसंकुलशरीरपातावधि क्षुद्रसुखदु:खपारवश्येन संसरतो मम भगवद्रामानुजभक्तप्रवरा एव बान्धवा भवन्ति। (इति समाश्वसिमि।।)

अत्यधिक दु:ख देनेवाले पापों के निमित्त, शरणागति नामक श्रेष्ठधर्म के आवश्यक दृढविश्वास से विरहित होकर, फलतया दुर्गंधयुक्त शरीर छूटने तक नानाविध क्षुद्रसुखदुख भोगते हुए इसी में असहाय पडे रहनेवाले मेरे लिए श्री रामानुज स्वामीजी के भक्त ही स्वामी होते हैं। (विवरण- श्री रामानुज स्वामीजी से उपदिष्ट भक्ति या प्रपत्ति में मेरा कोई संबंध नहीं; मैं संसार में ही पडा रहा हूँ; तथापि मैं उनके पादभक्तों का कृपापात्र हूँ और इसीसे मेरा उद्धार होगा।)

क्रमश:

(आयुर्वेद)

खीरा

- डॉ.सुमा जोषि

खीरा (Cucumis sativus L.) एक प्रसिद्ध शाकीय पौधा है, जो कुकुर्बिटेसी (Cucurbitaceae) कुल का सदस्य है। रसोई में खीरा एक बहुउपयोगी सब्जी के रूप में जाना जाता है। इसे कच्चा सलाद में, रायते में, सैंडविच या बर्गर में कुरकुरे स्वाद के लिए, और ठंडे पेयों (जैसे डिटॉक्स वॉटर) में प्रयोग किया जाता है। इसकी हल्की मिठास और ताजगी गर्मियों के मौसम में विशेष रूप से लोकप्रिय है। खीरा अधिकतर बिना पकाए खाया जाता है ताकि इसका रस, कुरकुरापन और पोषण बरकरार रहे, लेकिन कुछ व्यंजनों में इसे हल्का अचार, ठंडा सूप या सब्ज़ी के रूप में भी उपयोग किया जाता है। यह स्वाद बढ़ाने के साथ-साथ शरीर को ठंडक और जल की पूर्ति भी करता है।

इसका उद्गम स्थल भारत और दक्षिण एशिया माना जाता है, और यहाँ से यह प्राचीन काल में एशिया, यूरोप और अफ्रीका के अन्य भागों में फैल गया। खीरा एवं अन्य लौकी कुल के फल भारतीय संस्कृति में शीतलता और ताजगी के प्रतीक माने जाते हैं। कुछ क्षेत्रों में मान्यता है कि खीरा चंद्रमा के शीतल गुणों का प्रतीक है और इसे देवी-देवताओं के भोग में भी शामिल किया जाता था। लोककथाओं में खीरे को गर्मी से बचाने वाला और शरीर की ऊष्मा को संतुलित करने वाला फल बताया गया है। खीरे का उल्लेख लगभग 3,000 वर्ष पुराने संस्कृति ग्रंथों एवं पुरानी कृषि परंपराओं में मिलता है। महाभारत काल में भी इसके सेवन के उल्लेख हैं। प्राचीन यूनान, रोम और मिस्र की सभ्यताओं में खीरा एक लोकप्रिय शीतल फल के रूप में जाना जाता था और इसका उपयोग भोजन के साथ-साथ औषधीय प्रयोजनों में भी होता था। खीरा मधुर रस, शीतल वीर्य एवं पित्तशामक माना जाता है। यह मूत्रवर्धक, तृष्णाशामक और शरीर को शीतलता प्रदान करने वाला है। आयुर्वेद में इसे पाचन सुधारने, कब्ज कम करने और त्वचा को स्वच्छ रखने के लिए लाभकारी बताया गया है। इसमें जल की मात्रा अत्यधिक होने के कारण यह शरीर को हाइड्रेट करने में सहायक है।

खीरा (Cucumis sativus L.) एक वार्षिक लता जातीय पौधा है, जिसकी बेलें लंबी, रेंगने वाली और कोमल रोमों से युक्त होती हैं। इसके पत्ते हरे, खंडित और खुरदुरे होते हैं, तथा पीले रंग के छोटे-छोटे पुष्प एकलिंगी एवं एकवासी होते हैं। फल लंबाकार, हरे रंग का, चिकना अथवा हल्का खुरदुरा होता है, जिसके अंदर हल्के सफेद रंग का रसयुक्त गूदा और बीज होते हैं। यह मुख्यतः गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी तरह उगता है।

खीरे के पर्यायवाची : खीरे को संस्कृत और विभिन्न भाषाओं में कई नामों से जाना जाता है। आयुर्वेदिक और स्थानीय ग्रंथों में इसे श्वेतकरहाटकम्, सुधावासः

मूत्रलम्, कण्टकिफलम्, क्षीरा, शशा, तांस्ली तथा खीरा कहा गया है। विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में इसे मल्लूसावटे, सन्तेकायी, वेल्लरी, तौसे, खीरा, कान्तियाली काकुड़ी, वेल्लरिक्काय, पिप्पिन्काय और खीरकाया नामों से भी जाना जाता है।

रासयनिक संघटन

खीरे में लगभग 95-96% जल, कार्बोहाइड्रेट, अल्प मात्रा में प्रोटिन एवं वसा, विटामिन-C, विटामिन-K, बी-समूह के विटामिन, पोटैशियम, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस और कुछ एंटीऑक्सीडेंट यौगिक जैसे फ्लेवोनॉइड्स व टैनिन पाए जाते हैं। इसमें कैलोरी की मात्रा बहुत कम होती है, जिससे यह वजन नियंत्रित रखने में सहायक होता है।

खीरे की कई किस्में होती हैं, जो आकार, रंग, स्वाद और उपयोग के आधार पर अलग-अलग होती हैं। प्रमुख किस्में इस प्रकार हैं -

1. **देशी खीरा** (Cucumis sativus var.sativus) - हल्के हरे रंग का, लंबा व पतला, स्वाद हल्का मीठा।

2. **हाइब्रिड खीरा** (Cucumis sativus hybrid cultivars) - उन्नत किस्में, अधिक उपज व रोग-प्रतिरोधी।

3. **स्लाइसिंग खीरा** (Cucumis sativus var.sativus) - मोटा, लंबा, सलाद व स्लाइस के लिए उपयुक्त।

4. **पिक्लिंग खीरा** (Cucumis sativus var.Pickling) - छोटा, मोटा, अचार बनाने में विशेष।

5. **इंग्लिश/यूरोपियन खीरा** (Cucumis sativus var.sativus 'English') - लंबा, पतला, मुलायम छिलका, कम बीज।

6. **नींबू खीरा** (Cucumis sativus var.sativus 'Lemon') - गोल, पीला, स्वाद हल्का मीठा।

7. **बर्मी/आर्मेनियन खीरा** (Cucumis melo var. flexuosus) - लंबा, लहरदार, पतला छिलका, स्वाद मीठा।

खीरे का स्वाद मुख्यतः मधुर होता है, जिसमें हल्की सी कड़वाहट भी पाई जाती है, जो इसे स्वाभाविक रूप से संतुलित करने वाला आहार बनाती है। इसका गुण हल्का और शीतल है। इसकी वीर्य भी शीतल है। विपाक (पाचन के बाद का स्वाद) मधुर होता है। ये सभी गुण मिलकर खीरे को पित्त दोष शांत करने वाला उत्तम आहार बनाते हैं।

प्रयोग में आने वाला भाग (Part used) :

- फल
- बीज

मात्रा (Dosage) :

- ताज़ा रस : 25-50 मि.ली.
- बीज चूर्ण : 3-6 ग्राम।

खीरे के उपयोग के तरीके

- **कच्चा खीरा :** खीरे की 3-4 स्लाइस लें। इनमें से 2 स्लाइस अपनी पलकों पर रखें और 1-2 स्लाइस से चेहरे पर हल्की मालिश करें। इससे डार्क सर्कल नियंत्रित होते हैं और त्वचा को शीतलता मिलती है।
- **खीरे का रस टोनर :** 1-2 चम्मच खीरे का रस लें और उसमें गुलाबजल मिलाएँ। एक कॉटन पैड इसमें डुबोकर चेहरे और गर्दन को धीरे-धीरे पोंछें। यह उपाय सोने से पहले करने पर धूप से हुई टैनिंग दूर करने में सहायक है।
- **खीरे का तेल :** 2-5 बूंध खीरे का तेल लें और उसमें जैतून या नारियल का तेल मिलाएँ। प्रभावित स्थान पर दिन में 1-2 बार लगाएँ।

- **खीरे के बीज का चूर्ण :** $^{1}/_{2}$–1 चम्मच खीरे के बीज का चूर्ण लें। इसमें गुलाबजल या शहद मिलाकर पेस्ट तैयार करें। इस त्वचा पर लगाकर 20–30 मिनट तक रहने दें, फिर साधारण पानी से धो लें। इस प्रयोग को सप्ताह में 1–2 बार दोहराएँ।

खीरे के आयुर्वेदिक स्वास्थ्य लाभ

- खीरे का सेवन प्यास तथा पूरे शरीर में होने वाली जलन को शांत करने के लिए किया जाता है।
- खीरे का रस मूत्र करते समय होने वाली जलन (burning micturition) में लाभकारी है।
- खीरे के बीजों को पानी के साथ मिलाकर सेवन करने से प्यास शांत होती है।
- सूखे बीजों का चूर्ण 3–5 ग्राम की मात्रा में लेने से स्नायु और मांसपेशियों की सामान्य दुर्बलता दूर होती है।
- खीरे की स्लाइस को सिर पर रखने से अनिद्रा और अशांत नींद में राहत मिलती है।
- सुबह के समय उबले चावल या मांड (rice gruel) के साथ खीरे की स्लाइस का सेवन करने से मूत्र मार्ग संक्रमण (UTI) और पथरी में लाभ मिलता है।
- खीरे में कैलोरी की मात्रा बहुत कम होती है और यह जल तथा घुलनशील रेशों से भरपूर होता है। एक अकेला खीरा लगभग 96% पानी से बना होता है। कम कैलोरी और अधिक जल की उपस्थिति के कारण खीरा वजन कम करने तथा निर्जलीकरण (डिहाइड्रेशन) को नियंत्रित करने में अत्यंत प्रभावी है।
- इसे दैनिक आहार में कच्चे सलाद के रूप में लिया जा सकता है। नाश्ते में खीरे का रस लेने से मूत्र मार्ग संक्रमण (UTI) में भी राहत मिलती है।
- खीरे का गूदा या रस त्वचा पर लगाने से धूप से हुई जलन कम होती है, मुहांसों की रोकथाम होती है तथा आँखों के आस-पास की काली झाइयाँ और सूजन कम होती है। यह प्रभाव इसकी शीत (शीतल), रोपण (चिकित्सात्मक/घाव भरने वाली) और कषाय (संकोचक) गुणों के कारण होता है।
- खीरा गठिया (Gouty arthritis) के लक्षणों को कम करने में सहायक है। गठिया एक दर्दनाक चयापचयी (metabolic) रोग है जिसमें जोड़ों में सूजन तथा यूरिक एसिड का जमाव होता है। आयुर्वेद में इस **वातरक्त** कहा गया है, क्योंकि इसमें मुख्य दोष वात होता है और यह रक्त को प्रभावित करता है, इसलिए इसका नाम वातरक्त पड़ा। खीरे का रस सेवन करने से इसकी मूत्रल (मूत्रवर्धक) गुणधर्म के कारण शरीर से यूरिक एसिड और विषैले पदार्थ बाहर निकलते हैं, जिससे रोग में राहत मिलती है।
- धूप से झुलसने (सनबर्न) की अवस्था में खीरे का रस अथवा गूदा लगाने से जलन की अनुभूति कम होती है और त्वचा की क्षति भी भरने लगती है। यह प्रभाव इसके **शीत (ठंडक प्रदान करने वाले)** और **रोपण (चिकित्सात्मक/घाव भरने वाले)** गुणों के कारण होता है।
- खीरा त्वचा संबंधी समस्याओं जैसे मुहांसे या पिम्पल्स में उत्तम परिणाम देता है। प्रभावित स्थान पर खीरे का गूदा या रस लगाने से इसके **कषाय (संकोचक)** गुण के कारण अतिरिक्त सीबम या तेल का उत्पादन रुकता है। साथ ही इसके **शीत (ठंडक देने वाले)** और शोधन (शुद्धीकरण) गुणों के कारण सूजन कम होती है और मवाद भी बाहर निकल जाता है।

- **विधि :** 1 खीरे को कद्दूकस करें, उसमें 1–2 चम्मच बेसन डालें और आवश्यकता अनुसार पानी मिलाकर लेप तैयार करें। इस लेप को प्रभावित स्थान पर लगाने से मुहांसे या पिम्पल्स दूर होते हैं।
- पका हुआ (पीला) खीरे का गूदा बालों की वृद्धि को उत्तेजित करता है और उन्हें घना एवं स्वस्थ बनाता है। यह प्रभाव इसके **वातशामक गुण** के कारण होता है। साथ ही इसके **कषाय (संकोचक)** गुण के कारण यह रूसी (डैंड्रफ) को भी नियंत्रित करता है।
- विधि : $^{1}/_{2}$–1 कप खीरे का गूदा लें और उसमें गुलाबजल मिलाकर पेस्ट तैयार करें। इस पेस्ट को अच्छी तरह से पूरे सिर की खोपड़ी पर लगाएँ। कम से कम 1–2 घंटे तक रहने दें। इसके बाद साधारण पानी से धो लें। इस प्रयोग को सप्ताह में दो बार करने से बाल स्वस्थ, घने और मजबूत बनते हैं।
- खीरे में फ्लेवोनॉयड पाए जाते हैं, जिनमें सूजनरोधी(anti-inflammatory) गुण होते हैं और यह शरीर में उपस्थित हानिकारक मुक्त कणों (free radicals) से लड़ने में सहायक होते हैं। मुक्त कणों को समाप्त करने से बीमारियों का खतरा कम होता है तथा दर्द और असुविधा से राहत मिलती है।
- खीरे में अनेक प्रकार के **बी-विटामिन** पाए जाते हैं, जिनमें विटामिन B1, विटामिन B5 और विटामिन B7 प्रमुख हैं। ये विटामिन चिंता (Anxiety) की भावनाओं को कम करने में सहायक होते हैं तथा तनाव (Stress) से होने वाले हानिकारक प्रभावों को भी घटाते हैं।
- खीरे में प्रचुर मात्रा में **मैग्नीशियम, रेशे (फाइबर) और पोटैशियम** पाए जाते हैं, जो रक्तचाप को संतुलित बनाए रखने में मदद करते हैं। यह धमनियों में दबाव को कम करते हैं और उन्हें हाइड्रेटेड रखते हैं। यही कारण है कि उच्च रक्तचाप (Hypertension) से पीड़ित लोगों को खीरा सेवन करने की सलाह दी जाती है।
- खीरे में **एस्कॉर्बिक अम्ल** (Vitamin C) और **कैफिक अम्ल** पाया जाता है, जो शरीर की स्नायुबंधन (ligaments), उपस्थित (cartilage), पेशीबंधन(tendons) और अस्थियों (bones) को मजबूत बनाने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त इसमें उपस्थित **सिलिका** संयोजी ऊतक (connective tissue) के निर्माण में मदद करती है, जिससे कमजोर हड्डियाँ भी सुदृढ होती हैं।
- खीरा जल और रेशों (फाइबर) से भरपूर होता है, जो स्वस्थ पाचन के लिए आवश्यक दो मुख्य तत्व हैं। अपने जूस या सलाद में खीरे को शामिल करने से शरीर को आवश्यक मात्रा में फाइबर प्राप्त होता है और पाचन क्रिया सुचारु बनी रहती है।
- खीरे और हल्दी का मिश्रण त्वचा पर लगाने से दाने, चकत्ते और अन्य सूजनयुक्त त्वचा की समस्याओं में लाभ मिलता है।
- **कुकुर्बिटासिन (Cucurbitacin)**: यह यौगिक खीरे में पाया जाता है और इसके **कैंसररोधी** (anticancer) गुण हो सकते हैं। हालांकि इस पर अनुसंधान जारी है, कुछ अध्ययनों से संकेत मिलता है कि कुकुर्बिटासिन कुछ प्रकार की कैंसर कोसिकाओं के विकास को रोक सकता है।

खीरा के संभावित दुष्प्रभाव :

- **विषाक्तता :** अधिक मात्रा में क्यूकर्बिटासिन्स पेट में परेशानी, मतली और उल्टी का कारण बन सकते हैं।

- **अत्यधिक पानी की हानि :** अधिक सेवन से निर्जलीकरण, इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन, थकान, चक्कर और मांसपेशियों में ऐंठन हो सकती है।
- **पाचन समस्याएँ :** बड़ी मात्रा में घुलनशील फाइबर से फुलावट, गैस, अपच या दस्त हो सकते हैं, विशेषकर संवेदनशील व्यक्ति या IBS वाले लोग।
- **एलर्जिक प्रतिक्रियाएँ :** कुछ लोगों में खुजली, सूजन, छींक या सांस लेने में कठिनाई हो सकती है, खासकर जो रैगवीड या खरबूजे से एलर्जिक हैं।
- **किडनी और हृदय पर प्रभाव :** खीरे से अत्यधिक पोटेशियम किडनी पर दबाव डाल सकता है और हृदय की लय और कार्डियोवैस्कुलर स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।

खीरे का सेवन करते समय सावधानियाँ :

1. **मितव्ययिता बनाए रखें :** पाचन समस्याएँ, निर्जलीकरण या अत्यधिक पोटेशियम से बचने के लिए अधिक सेवन से बचें।
2. **अच्छी तरह धोएँ :** कीटनाशक, गंदगी और बैक्टीरिया हटाने के लिए खीरे को अच्छी तरह धोएँ।
3. **एलर्जी का ध्यान रखें :** यदि आप रैगवीड, खरबूजे या अन्य एलर्जिक पदार्थों से एलर्जिक हैं, तो सावधानीपूर्वक सेवन करें।
4. **संवेदनशील पेट :** IBS या कामजोर पाचन वाले लोग थोड़ी मात्र में खाएँ ताकि फुलावट, गैस या दस्त से बचा जा सके।
5. **किडनी और हृदय की समस्या :** किडनी या हृदय रोग वाले लोगों को पोटेशियम की उच्च मात्रा के कारण सेवन पर ध्यान रखना चाहिए।
6. **कड़वाहट की जांच करें :** कड़वा स्वाद वाले खीरे में अधिक क्यूकर्बिटासिन हो सकता है, जो पेट में परेशानी पैदा कर सकता है।
7. **सही तरीके से स्टोर करें :** सड़े या खराब खीरे नखाएँ।
8. वर्षा ऋतु (बरसात के मौसम) में खीरे का सेवन आदर्श नहीं माना जाता।

निष्कर्ष

खीरे पौष्टिक और हाइड्रेटिंग भोजन हैं, लेकिन अधिक सेवन से अनचाहे स्वास्थ्य प्रभाव हो सकते हैं। एलर्जिक प्रतिक्रियाओं और किडनी व हृदय पर संभावित प्रभावों से बचने के लिए संतुलित मात्रा में सेवन करना आवश्यक है। खीरे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक रहने से आप इसके फायदे उठा सकते हैं और संभावित जोखिमों से बच सकते हैं। यहाँ दी गई जानकारी केवल सामान्य जानकारी के लिए है। किसी भी संदेह या समस्या के लिए कृपया चिकित्सक से परामर्श करें। सुरक्षित रहें और स्वस्थ रहें।

दिसंबर 2025

01 श्री गीताजयंती
02 श्री चक्रतीर्थ मुक्कोटी
03 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का कृत्तिका दीपोत्सव, हनुमद् व्रत
04 श्री दत्तजयंती, श्री कपिलतीर्थ मुक्कोटी
16 धनुर्मास आरंभ
19 तिरुमल श्री बालाजी के सन्निधि में अध्ययनोत्सव आरंभ
29 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का प्लवोत्सव प्रारंभ
30 वैकुंठएकादशी
31 श्री स्वामिपुष्करिणीतीर्थ मुक्कोटी

नवम्बर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - मंगल अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य बाधा, घरेलु उलझनें तथा बनते कार्यों में अड़चनें रहेगी। वाणी-व्यवहार की अकुशलता से परेशानी, परदेशवास, नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य, धनागम में बाधा, पारिवारिक दायित्व की वृद्धि, विपरीत स्थितियों में क्रमशः सुधार, धर्माचरण से मनोबल मजबूत होगा। गुरु की दृष्टि रहने से मांगलिक कार्यों पर खर्च, धार्मिक-बौद्धिक विकास।

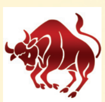

वृषभ राशि - शुक्र षष्ठस्थ स्वराशिगत होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होने के योग बन रहें हैं, विचारों में उग्रता, शक्ति संवर्धन, शैक्षणि उदासीनता, सुखद यात्रा, सुख-सौहार्द्र की वृद्धि, उद्योग-व्यापार में श्रम साध्य सफलता। धीरे-धीरे आर्थिक क्षेत्र में कुछ परिवर्तन एवं लाभ के योग बनेंगे। मंगल एवं शनि की दृष्टियाँ इस राशि पर होने से योजनाओं में विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होंगे।

मिथुन राशि - मास फल मिश्रित रहेगा। मासारम्भ में बुध षष्ठस्थ होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में दौड़-धूप अधिक एवं स्वास्थ्य बाधाएँ रहेंगी। कार्य क्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, आर्थिक लेन-देन में सावधानी, गृहस्थ जीवन सुखी, व्यापार धन्धे में श्रम साध्य सफलता मिलेगी। समस्याओं का समाधान। जमीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होंगी।

कर्कटक राशि - भाग्येश गुरु उच्च राशिगत संचार करने से उत्साह व पराक्रम में वृद्धि होगी। आत्मीयजनों का सहयोग-समर्थन, आर्थिक मजबूती, गृहस्थ जीवन सुखी, सामयिक-सामाजिक विकास, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, निर्माण कार्यों में रुचि, आकस्मिक आय, व्यापारिक प्रगति। मान-सम्मान में वृद्धि एवं धर्म-कर्म में रुझान बढ़ेगा।

सिंह राशि - मास के शुरू में ही शुक्र का परिवर्तन कार्य क्षेत्र की विघ्न बाधाओं के निवारण में सहायक, नौकरी व्यवसाय की स्थिति सुखद, सामाजिक विकास, आर्थिक समुन्नति, सम्मान लाभ। सूर्य नीचराशिगत एवं केतु संचार के कारण धन लाभ। परिवार में अकारण ही विरोधाभास और तनाव उत्पन्न होंगे।

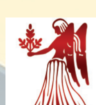

कन्या राशि - मासारम्भ में बुध तृतीयस्थ होने से कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। प्रभाव-प्रताप में वृद्धि, संतान सुख, शैक्षणिक विकास, मित्रों का सहयोग, रचनात्मक प्रवृत्ति, आर्थिक संतुलन, गृहस्थ जीवन सौहार्द्र पूर्ण, उद्योग-धन्धे में सफलता, शुभ संवाद। साझेदारी के कार्यों में प्रतिष्ठा बढ़ेगी, परन्तु विशेष लाभ नहीं होगा।

तुला राशि - शुक्र स्वराशिगत रहने से मान-प्रतिष्ठा एवं धन लाभ के अवसर बढ़ेंगे। इष्ट-कुटुम्बियों से हर्षोल्लास कार्य-व्यापार में सफलता, आरोग्य सुख, धनागम, सृजनात्मक शक्ति का विकास, नौकरी में अनुकूलता, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, उत्तरार्ध में अनुकूलता बढ़ेगी। अपने सहयोगियों के समाधान से कार्यों में विघ्न-बाधाओं का समाधान।

वृश्चिक राशि - दैनन्दिन जीवन की नियमितता से स्वास्थ्य उत्तम, शक्ति संवर्धन, राजकीय पक्ष का सहयोग, यात्रा सुखद, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, नौकरी में उल्लास, आर्थिक संतुलन। मंगल का इस राशि पर संचार तथा गुरु की दृष्टि के कारण धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। उत्तरार्ध में सूर्य का परिवर्तन शुभ रहेगा।

धनुष राशि - राशिस्वामी गुरु उच्चस्थ होने से धार्मिक कार्यों की ओर रुझान बढ़ेगा, परन्तु अष्टमस्थ होने से प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होंगी। किन्तु मंगल स्वगृही होकर उलझनों को दूर करने में सहायक होगा। शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न रहेगा। आकस्मिक आय, दैनन्दिन जीवन में नियमितता, नौकरी में उल्लास, व्यापार में सफलता।

मकर राशि - मास फल उत्तम रहेगा। गुरु की नीच दृष्टि रहने से क्रोध अधिक व मानसिक तनाव रहेगा। पारिवारिक उलझनें व समस्याएँ उभरेंगी। प्रभाव-प्रताप की वृद्धि, सर्वतोमुखी सफलता, आरोग्य सुख, सामयिक-सामाजिक विकास, मान सम्मान की वृद्धि, एकाधिक स्त्रोतों से आय, धर्म-कर्म में रुचि।

कुंभ राशि - मासारम्भ में मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध अधिक, बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझनें बढेंगी। कार्यों में सकारात्मक प्रगति, विरोधियों पर दबाव, नौकरी-व्यवसाय की स्थिति अनुकूल रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी, धनागम, घरेलू सुख की वृद्धि, विशिष्ट लोगों के सम्पर्क का लाभ मिलेगा। उत्तरार्ध में मिला-जुला प्रभाव दिखेगा।

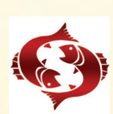

मीन राशि - गुरु की स्वगृहि दृष्टि से अचानक धन प्राप्ति के साधन बढेंगे और नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। आर्थिक विकास का मार्गप्रशस्त होगा। रोग-शोक-ऋण-शत्रु बाधा का निवारण, इष्ट-मित्र-परिवार का सामयिक सहयोग, नौकरी व्यापार-व्यवहार में अनुकूल परिस्थितियाँ बनेंगी। उत्तरार्ध में सूर्य-बुध का परिवर्तन मिला-जुला प्रभाव रहेगा। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। किसी मित्र के सहयोग से नया कार्य आरम्भ होगा।

(नीतिकथा)

बेज़ुबान जानवर

- श्री के.रामनाथन

शहलपुर नामक उस छोटे गाँव में माधवराव नामक एक किसान रहता था। उसकी पत्नी का नाम महिमा और पुत्र का नाम गोपाल है। माधवराव दो गायों का पालन-पोषण करता था। उसमें एक गाय का नाम है लक्ष्मी और दूसरी का नाम गौरी है। उन दोनों गायों में लक्ष्मी बड़ा चतुर था और उसे मानव के व्यवहारों तथा गुणों का अच्छा ज्ञान थी। वह सदा क्रियाशील रहती थी। इसलिये माधवराव को उस पर बड़ा स्नेह था। वह गाय भी उसके प्रति समय समय पर अपना प्रेम प्रकट करती थी।

यदि माधवराव किसी काम पर कहीं दूर जाता था तो उसके लौटने तक वह लक्ष्मी गाय घास नहीं खाती थी। उसके आने के बाद और उसके खिलाने पर ही खाती थी। माधवराव का बेटा गोपाल को भी उस लक्ष्मी गाय के प्रति बड़ा प्रेम था। गौरी गाय की बात ऐसी नहीं थी। वह किसी के बारे में कोई परवाह नहीं करती थी। समय समय पर मिलते घास को खाकर वह ऐसे ही सुस्त पड़ी रहती थी।

माधवराव उन दोनों गायों द्वारा मिलते दूध बेचकर अपना जीवन यापन करता था। समय पर घास खिलाकर उनको स्वस्थ रखने के कारण उन दोनों गायों से अधिक दूध मिलता था। एक दिन माधवराव और उसकी पत्नी पास के गाँव में संपन्न एक मंदिर के उत्सव में भाग लेने गये थे। उस दिन गोपाल स्कूल गया हुआ था। माँ-बाप ने सोचा कि शाम तक वापस आ जायेंगे। लेकिन उनके आने में देर हो गयी।

स्कूल से घर लौटा गोपाल गायों को घास खिलाने के बाद खेलने चला गया। खेलते खेलते वह पास की एक नदी में फिसलकर गिर गया। लक्ष्मी गाय उन सब को देख रही थी। वह तुरंत दौड़कर नदी में कूद पड़ी और गोपाल को बचाकर किनारे पर ले आयी। गाय ने अपने पैर से गोपाल के पेट पर जोर से मारकर अंदर के पानी को बाहर निकला दिया और उसके प्राण बचा दिये। यह देखकर अडोस-पडोस वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

घर वापस आये माधवराव और महिमा को गाँववालों ने लक्ष्मी गाय के कार्य के बारे में विस्तार से बताया। यह सुनकर माधवराव और उसकी पत्नी की आँखों से आनंद की अश्रु बहने लगी। उन दोनों ने लक्ष्मी गाय को धन्यवाद दिया।

अब माधवराव अपने परिश्रम से बड़ा धनवान बन गया। फिर भी वह उन गायों की मदद को कभी नहीं भूला। उसने अपनी उन्नति के लिये कारण बनी उन गायों को रेशमी वस्त्रों को ओढ़ाकर और उनकी पूजा करके उचित सम्मान किया।

वह गाँव वालों से बता रहा था कि मेरी उन्नति और समृद्धि का कारण ये दो गायें हैं। इन दोनों के वजह से मुझ सुविधापूर्ण जीवन प्राप्त हुआ है। जब वह ऐसा कह रहा था। तब वहाँ एक भिखारी के वेष में आया एक चोर ने सुना। उसने सोचा और निश्चय कर लिया कि इसके घर में चोरी करने पर जीवन भर आनंदमय जीवन बिता सकते हैं।

उस दिन रात वह चोर सबके सोने के बाद माधवराव के घर के अन्दर आया और उसने देखा कि सब लोग गहरी नींद में है। वह आवाज किया बिना चोरी करने लगा। सारे आभूषण और धन सब कुछ बटोर करके उस गट्ठर को उठाकर बाहर आया।

उस समय लक्ष्मी गाय ने उसके सारे कार्य को देख लिया। जब वह घर से बाहर आया तब वह गाय तेजी से आकर उसे नीचे धकेल दिया और उसे अपने पैरों से लात मारने लगा। इससे वह अपने प्राण बचाने के लिये चिल्लाने लगा। गाय ने भी जोर से रंभाई।

लक्ष्मी गाय का रंभाना सुनते ही माधवराव जाग उठा। वह तुरंत बाहर आकर देखा तो सारा मामला मालूम हुआ। उसने चोर को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया और अपने धन को बचाये उस लक्ष्मी गाय की बड़ी प्रशंसा की।

सच है गाय जैसे जानवर बेजुबान हो सकते हैं। लेकिन मानवों के साथ मिल-जुलकर रहने के कारण उन्हें मानवों के व्यवहार का अच्छा ज्ञान रहता है। ऐसे जानवरों के साथ हम जैसा व्यवहार करते हैं वैसा व्यवहार वे भी हमारे साथ करते हैं। इसलिये मानव जीवन के लिये उपयोगी जानवरों के साथ मानवीयता का व्यवहार करके उनका स्नेह प्राप्त करें। हमें कभी भी उनको मारना नहीं चाहिए बल्कि उनका प्रेम से पालन-पोषण करना चाहिये।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माड़ावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

चित्रकथा

सोने की वर्षा

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकानाथ

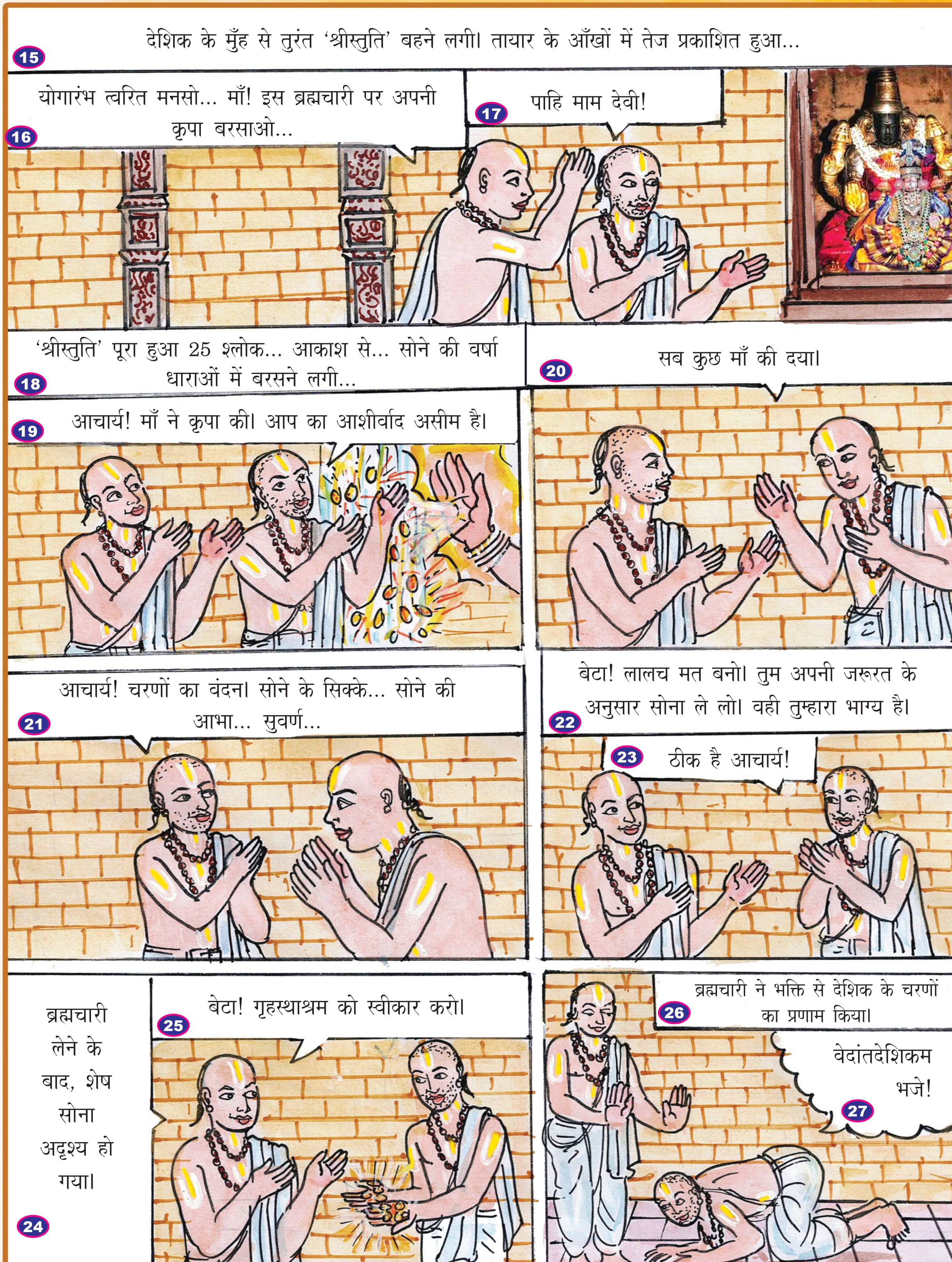

देशिक के मुँह से तुरंत 'श्रीस्तुति' बहने लगी। तायार के आँखों में तेज प्रकाशित हुआ...
15
योगारंभ त्वरित मनसो... माँ! इस ब्रह्मचारी पर अपनी कृपा बरसाओ...
16
17
पाहि माम देवी!
'श्रीस्तुति' पूरा हुआ 25 श्लोक... आकाश से... सोने की वर्षा धाराओं में बरसने लगी...
18
19
आचार्य! माँ ने कृपा की। आप का आशीर्वाद असीम है।
20
सब कुछ माँ की दया।
आचार्य! चरणों का वंदन। सोने के सिक्के... सोने की आभा... सुवर्ण...
21
बेटा! लालच मत बनो। तुम अपनी जरूरत के अनुसार सोना ले लो। वही तुम्हारा भाग्य है।
22
23
ठीक है आचार्य!
ब्रह्मचारी लेने के बाद, शेष सोना अदृश्य हो गया।
24
बेटा! गृहस्थाश्रम को स्वीकार करो।
25
ब्रह्मचारी ने भक्ति से देशिक के चरणों का प्रणाम किया।
26
वेदांतदेशिकम भजे!
27

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं..

क्विज-40

1) तिरुचानूर में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..

2) पद्मसरोवर में कौन सा उत्सव संपन्न करते हैं?
ज)..

3) धन्वंतरि भगवान कहा उद्भव हुआ है?
ज)..

4) श्री पद्मावती देवी का माताजी का नाम क्या है?
ज)..

5) कलिशांति यज्ञ किस नदी के तट पर करने का ऋषियों ने निर्णय लिया?
ज)..

6) किस महर्षि ने श्री महाविष्णु को अपमानित किया?
ज)..

7) श्री महालक्ष्मी वैकुंठ को छोडकर किस जगह को पहुँचा?
ज)..

8) नव नंदियों में पाँचवा नंदि का नाम क्या है?
ज)..

9) नवनंदि का पूरा मंदिर आंध्रप्रदेश में किस जगह पर उपस्थित है?
ज)..

10) 'रामचरितमानस' के लेखक कौन है?
ज)..

11) खीरे में कितने प्रतिशत पानि होता है?
ज)..

12) खीरा किस कुल वर्ग के अंतर्गत आता है?
ज)..

13) माँ पद्मावती का प्रधान वाहन सेवा क्या है?
ज)..

14) वेदांतदेशिक कहा रहा था?
ज)..

15) नवनंदियों में आखिर नंदि का नाम क्या है?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

तालिका में सूचित विषय के अनुसार चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

(f)

(g)

(h)

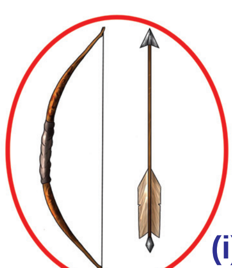
(i)

आधार :
1) कैशिक द्वादशी के संबंधित चित्रों को चुनिए...
2) श्री महाविष्णु के संबंधित वाहन को पहचान लीजिए?
3) श्री महालक्ष्मी के संबंधित वाहन को पहचान लीजिए?
4) भगवान शिव के संबंधित वाहन को पहचान लीजिए?
5) तिरुमंगै आल्वार संबंधित चित्रों को चुनिए...

जवाब : 1) (c) नंपडुवन, (e) श्री महाविष्णु (h) ब्रह्मराक्षस
2) (d) गरुड़वाहन
3) (a) गजवाहन
4) (f) नंदिवाहन
5) (b) कुमुदवल्ली(पत्नी), (g) तिरुमंगै आल्वार, (i) बाण

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

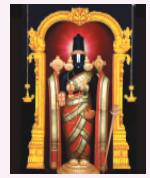

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....
2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर : 2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि.25-09-2025 को तिरुमल में नूतन आवास समुदाय केंद्र 'वेंकटाद्रि निलय' को भारत के माननीय उप-राष्ट्रपति श्री सी.पी.राधाकृष्णन् जी और आं.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबू नायडू जी ने शुभारंभ करते हुए दृश्य। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, आं.प्र. के शासकीय मंत्रीगण और ति.ति.दे. का अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

दि.25-09-2025 को तिरुमल में वैकुंठम् क्यू कांप्लेक्स केंद्र में स्थित (Integrated Common Command Control Center) एकीकृत सामान्य कमांड नियंत्रण केंद्र को प्रारंभोत्सव करते हुए आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन.चंद्रबाबू नायडू जी। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का ई.ओ. के साथ अन्य उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि.24-09-2025 को तिरुमल बालाजी भगवान जी को स्वर्ण यज्ञोपवीत को भेंट करते हुए हिन्दुस्थान येंटर प्रैजस एम.डी. श्री पुव्वाड मस्तान राव के दंपति ने समर्पित किया। इस संदर्भ में भेंट को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी को सौंपा दिया है।

दि.18-09-2025 को तिरुमल में स्थित मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्न-प्रसाद केंद्र को निरीक्षण करते हुए ति.ति.दे. का ई.ओ. श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस.।

दि.13-09-2025 को तिरुमल श्री बालाजी मंदिर में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के पदेन सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण करते हुए धर्मस्व शाखा के सचिव श्री हरि जवहरलाल, आई.ए.एस., जी। इस संदर्भ में चित्रपठ को देते हुए ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ.।

दि.13-09-2025 को तिरुमल श्री बालाजी मंदिर में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण करते हुए श्री सुदर्शन वेणु जी। इस संदर्भ में चित्रपठ को देते हुए ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ.।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on
25-10-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the
Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957.
Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का पुष्पयाग महोत्सव

26-11-2025